पुणे विद्यापीठ

परिपत्रक क्र. १८३/२००२

विषय : एम.ए.भाग-१ हिंदी अभ्यासक्रमाबाबत

या परिपत्रकाद्वारे सर्व संबंधितांस विद्यापीठ अधिकार मंडळाने घेतलेल्या निर्णयानुसार असे कळविण्यात येत आहे की, एम.ए. भाग-१ ह्या परीक्षेच्या हिंदी ह्या विषयाचा सोबत जोडण्यात आलेला अभ्यासक्रम शैक्षणिक वर्ष २००२-२००३ पासून सुधारित करण्यात येत आहे.

गणेशखिंड, पुणे-४११००७
जा.क्र. : सीबीए/३०९१
दिनांक : १४-६-२००२

ला. फु. वसावे
कुलसचिवांकरिता

पुणे विश्वविद्यालय
एम.ए. हिंदी पाठ्यक्रम

(शैक्षणिक वर्ष : २००२-२००३, २००३-२००४ तथा २००४-२००५)

(प्रस्तुत पाठ्यक्रम का निर्माण विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली की "मॉडल पाठ्यचर्या" के आलोक में किया गया है।)

एम.ए. हिंदी प्रथम और द्वितीय वर्ष के इस पाठ्यक्रम का अध्ययन व अध्यापन एक साथ जून २००२ से आरंभ होकर मई-जून २००५ तक की परीक्षा के लिए होगा।

संपूर्ण पाठ्यक्रम का विभाजन दो वर्षों के लिए होगा। विद्यार्थियों को निर्धारित पाठ्यक्रम में से प्रथम वर्ष के लिए प्रश्नपत्र १ से ४ तक का और द्वितीय वर्ष के लिए प्रश्नपत्र ५ से ८ तक का अध्ययन करना होगा।

'संपूर्ण हिंदी' विषय लेनेवाले विद्यार्थियों के लिए सामान्य स्तर और विशेष स्तर के प्रश्नपत्रों का अध्ययन करना होगा। गौण विषय के रूप में हिंदी का अध्ययन करनेवाले विद्यार्थियों को प्रथम वर्ष में प्रश्नपत्र-१ (सामान्य स्तर) और द्वितीय वर्ष में प्रश्नपत्र-५ (सामान्य स्तर) का अध्ययन करना होगा।

प्रश्नपत्र २, ३, ४, और ६, ७, ८ विशेष स्तर के रहेंगे। इनमें से प्रश्नपत्र ४ और प्रश्नपत्र ८ के अंतर्गत ६/६ विकल्प रखे गए हैं। विद्यार्थियों को इनमें से प्रतिवर्ष किसी एक ही वैकल्पिक प्रश्नपत्र का चयन करना होगा।

किसी विशेष विषय में विशेषता प्राप्त करने के लिए प्रश्नपत्र ४ और प्रश्नपत्र ८ के अंतर्गत प्रति वर्ष के लिए ६/६ विकल्प रखे गए हैं। विद्यार्थी अपने अध्ययन केंद्र में पढाए जानेवाले विकल्पों में से किसी एक ही विकल्प का अध्ययन कर सकता है।

महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ

१. प्रथम एवं द्‌वितीय वर्ष की सत्रांत परीक्षा प्रत्येक पाठ्‌यक्रम के लिए ६० अंकों की होगी।

२. प्रथम वर्ष की प्रत्येक पाठ्‌यक्रम की वार्षिक सत्रांत लिखित परीक्षा ६० तथा मौखिक परीक्षा २० अंकों की होगी।

३. द्‌वितीय वर्ष की वार्षिक लिखित परीक्षा ८० अंकों की होगी। दवितीय वर्ष के लिए मौखिक परीक्षा का प्रावधान नहीं है।

४. प्रथम सत्र के पाठ्‌यक्रम पर ४०% अंकों के तथा द्‌वितीय सत्र के पाठ्‌यक्रम पर ६०% अंकों के प्रश्न होंगे।

पाठ्‌यक्रम के उद्‌देश्य

- छात्रों में साहित्य को समझने, उसका आस्वादन करने तथा मूल्यांकन करने की दृष्टि बढ़ाना।
- हिंदी साहित्य की प्राचीन व आधुनिक गद्य, पद्य विधाओं का तात्त्विक परिचय कराना।
- साहित्यिक प्रवृत्तियों के संदर्भ में विभिन्न साहित्य विधाओं के विकास-क्रम का परिचय कराना।
- साहित्यकृतियों का विविध दृष्टियों से विवेचन विश्लेषण, आस्वादन तथा समीक्षा करने की दृष्टि देना।
- साहित्यकारों के साहित्यिक व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय कराना तथा साहित्य के लिए उनके योगदान पर प्रकाश डालना।
- प्राचीन एवं आधुनिक भारतीय एवं पाश्चात्त्य समीक्षा सिद्‌धांतों और आलोचना प्रणालियों का अध्ययन कराना।

- भाषाविज्ञान, अनुवादविज्ञान, शैलीविज्ञान और सौंदर्यशास्त्र, लोकसाहित्य, प्रयोजनमूलक हिंदी, जनसंचार माध्यम और हिंदी, भारतीय साहित्य आदि विषयों के अध्ययन के लिए छात्रों को प्रोत्साहन देना।
- हिंदी भाषा की व्यावहारिक उपयोगिता का परिचय कराना। छात्रों की साहित्य संबंधी अभिरुचि तथा आस्वादन क्षमता में अभिवृद्धि करना।
- छात्रों को जनसंचार एवं इलैक्ट्रानिक मीडिया में हिंदी की उपादेयता तथा सूचना प्रौद्योगिकी के नये क्षेत्र में हिंदी की विकास यात्रा की जानकारी देकर उनमें अभिरुचि निर्माण करना।

पाठ्यक्रम की रूपरेखा
एम.ए. (हिंदी) प्रथम वर्ष

प्रश्नपत्र-१ : सामान्य स्तर : आधुनिक गद्य
(उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध और संस्मरण/रेखाचित्र)

प्रश्नपत्र-२ : विशेष स्तर : प्राचीन काव्य

प्रश्नपत्र-३ : विशेष स्तर : भारतीय एवं पाश्चात्त्य साहित्यशास्त्र तथा आलोचना

प्रश्नपत्र-४ : विशेष स्तर : वैकल्पिक

विशेष साहित्यकार

(अ) तुलसीदास
(आ) नाटककार शंकर शेष
(इ) कवि निराला

विशेष विधा

(ई) हिंदी उपन्यास
(उ) हिंदी नाटक और रंगमंच

अन्य

(ऊ) प्रयोजनमूलक हिंदी

एम.ए. (हिंदी) द्वितीय वर्ष

प्रश्नपत्र-५ : सामान्य स्तर : आधुनिक काव्य

प्रश्नपत्र-६ : विशेष स्तर : भाषाविज्ञान और हिंदी भाषा

प्रश्नपत्र-७ : विशेष स्तर : हिंदी साहित्य का इतिहास

प्रश्नपत्र-८ : विशेष स्तर : वैकल्पिक

(क) आधुनिक हिंदी आलोचना
(ख) शैलीविज्ञान एवं सौंदर्यशास्त्र
(ग) अनुवाद विज्ञान
(घ) जनसंचार माध्यम और हिंदी
(च) अभिजात भारतीय साहित्य
(छ) लोकसाहित्य

प्रश्नपत्र-१ : सामान्य स्तर : आधुनिक गद्य

(उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध और संस्मरण/रेखाचित्र)

उद्देश्य :

१. प्रमुख गद्य विधाओं के तात्त्विक स्वरूप का परिचय देना।
२. प्रमुख गद्य विधाओं के विकासक्रम की जानकारी देना।
३. विधा-विशेष के तात्त्विक स्वरूप एवं ऐतिहासिक विकास के परिप्रेक्ष्य में रचना विशेष का महत्त्व समझने एवं मूल्यांकन करने का क्षमता बढ़ाना।
४. रचना के आस्वादन एवं समीक्षण की क्षमता बढ़ाना।

अध्यापन पद्धति :

१. व्याख्यान तथा विश्लेषण
२. संगोष्ठीख, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा
३. दृक-श्राव्य माध्यमों/साधनों का प्रयोग
४. नाटक के दृश्यों का मंचन
५. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान।

पाठ्यग्रंथ :

प्रथम सत्र

उपन्यास : **गिरमिटिया गांधी** : **गिरिराज किशोर,** (संक्षिप्तीकरण एवं संपादन-निर्मला जैन), **प्रकाशक** : वाणी प्रकाशन, २१-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२, **संस्करण** : प्रथम, २००१

कहानी : **कथा-यात्रा** : **संपादक**-राजेंद्र मिश्र, सहसंपादक-नरेंद्र सिंह फौजदार, **प्रकाशक** : तक्षशिला प्रकाशन, २३/४७६१, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२, **संस्करण** : प्रथम, २००१

द्वितीय सत्र

नाटक : **शुतुरमुर्ग**-ज्ञानदेव अग्निहोत्री, **प्रकाशक** : भारतीय ज्ञानपीठ, १८, इन्स्टिट्यूशन एरिया, लोवी रोड, नई दिल्ली-११०००३, **संस्करण** : चौथा पेपरबैक्स, १९९९

निबंध : **आँगन का पंछी और बनजारा मन**-विद्यानिवास मिश्र, **प्रकाशक** : वाणी प्रकाशन, २१-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२, **संस्करण** : प्रथम, २०००

निबंध क्रमांक-१, ३, ७, ८, १३, १४, १७, १८, २०.

संस्करण : **संस्मरण**-महादेवी वर्मा, **प्रकाशक** : राजपाल एण्ड सन्स, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट, नई दिल्ली-६, **संस्करण** : प्रथम, २००१

सूचनाएँ

(१) उपर्युक्त रचनाओं का तात्त्विक एवं ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन अपेक्षित है।

(२) दोनों सत्रों के प्रश्नपत्रों में निर्धारित पुस्तकों पर ससंदर्भ व्याख्या का प्रश्न अनिवार्य होगा।

संदर्भ ग्रंथ :

१. कथाकार गिरिराज किशोर–सुरेश सदावर्ते
२. उपन्यास शिल्पी : गिरिराज किशोर (वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली)–डॉ. ए. अरविंदाक्षण
३. अठारह उपन्यास–राजेंद्र यादव
४. हिंदी उपन्यास : सौ वर्ष–संपादक-रामदरश मिश्र
५. समकालीन हिंदी उपन्यास–डॉ. विवेक राय
६. उपन्यास : स्थिति और गति–डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर
७. आज का हिंदी उपन्यास–डॉ. इंद्रनाथ मदान
८. प्रेमचंदोत्तर उपन्यासों की शिल्पविधि–डॉ. सत्यपाल चुघ
९. नई कहानी का स्वरूप विवेचन (सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली) – डॉ. इंदु रश्मि
१०. नई कहानी के विविध प्रयोग–पांडेय शशिभूषण 'शीतांशु'
११. कहानी : संवाद का तीसरा आयाम–बटरोही
१२. समकालीन हिंदी कहानी–डॉ. पुष्पपाल सिंह
१३. कहानी की समाजशास्त्रीय समीक्षा–रमेश उपाध्याय
१४. हिंदी कहानी : संरचना और संवेदना (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)–डॉ. साधना शाह
१५. नई कहानी की भूमिका–कमलेश्वर
१६. नई कहानी : संदर्भ और प्रकृति–देवीशंकर अवस्थी
१७. हिंदी रंगकर्म : दशा और दिशा–डॉ. जयदेव तनेजा
१८. समकालीन हिंदी नाटक और रंगमंच– डॉ. जयदेव तनेजा
१९. आधुनिक हिंदी नाटकों में प्रयोगधर्मिता–डॉ. सत्यवती त्रिपाठी
२०. हिंदी नाटक : आज-कल (तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली)–डॉ. जयदेव तनेजा
२१. सातवें दशक के प्रतीकात्मक नाटक–रमेश गौतम
२२. युगबोध और हिंदी नाटक–डॉ. सरिता वशिष्ठ

२३. नव्य हिंदी नाटक–डॉ. सावित्री स्वरूप
२४. समसामायिक हिंदी नाटक : बहुआयामी व्यक्तित्व–डॉ. सुंदरलाल कथूरिया
२५. समसामायिक हिंदी नाटकों में खंडित व्यक्तित्व अंकन–डॉ. टी. आर. पाटील
२६. हिंदी के प्रतिनिधि निबंधकार–डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना
२७. आधुनिक निबंध साहित्य में मनोवैज्ञानिक उद्भावनाएँ–डॉ. श्रीमती प्रेमसिंह
२८. हिंदी साहित्य में निबंध और निबंधकार–डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त
२९. हिंदी के प्रमुख निबंधकार : रचना और शिल्प–डॉ. गणेश खरे
३०. हिंदी निबंध और निबंधकार–डॉ. ठाकुर प्रसाद सिंह
३१. हिंदी रेखाचित्र : सिद्धांत और विकास–डॉ. मक्खनलाल शर्मा
३२. हिंदी और मराठी के रेखाचित्रों का तुलनात्मक अध्ययन (अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर)–डॉ. सुरेशकुमार जैन
३३. हिंदी का संस्मरण साहित्य–डॉ. रामेश्वरण सहाय
३४. हिंदी रेखाचित्र–डॉ. हरवंशलाल शर्मा
३५. हिंदी का संस्मरण साहित्य–राजरानी शर्मा
३६. हिंदी गद्य शैली का विकास–डॉ. जगन्नाथ प्रसाद शर्मा
३७. हिंदी गद्यकार और उनकी शैलियाँ–डॉ. रामगोपाल सिंह चौहान
३८. हिंदी निबंध के सौ वर्ष–डॉ. मृत्युंजय उपाध्याय
३९. रामवृक्ष बेनीपुरी और उनका साहित्य–डॉ. गजानन चव्हाण
४०. महादेवी का गद्य साहित्य : विश्लेषण और स्वरूप–डॉ. गोवर्धन सिंह
४१. गद्य लेखिका महादेवी वर्मा–डॉ. योगराज थानी
४२. महादेवी का गद्य– डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित
४३. महादेवी वर्मा–संपा. शचीरानी गुर्टू।

प्र१

(**सूचना** : सभी प्रश्नों के लिए समान अंक होंगे)

प्रथम सत्र

(कुल अंक–६०)

१. उपन्यास पर दीर्घोत्तरी प्रश्न **अथवा** उपन्यास पर दीर्घोत्तरी प्रश्न।
२. कहानी पर दीर्घोत्तरी प्रश्न **अथवा** कहानी पर दीर्घोत्तरी प्रश्न।
३. उपन्यास तथा कहानी पर टिप्पणियाँ (५ में से ३)
४. ससंदर्भ व्याख्या–
   (अ) उपन्यास (२ में से १)
   (आ) कहानी (२ में से १)

द्वितीय सत्र

विभाग 'अ' (कुल अंक–६०)

१. उपन्यास पर दीर्घोत्तरी प्रश्न **अथवा** उपन्यास पर दीर्घोत्तरी प्रश्न।
२. कहानी पर दीर्घोत्तरी प्रश्न **अथवा** कहानी पर टिप्पणियाँ। (४ में से २)

विभाग 'ब'

(विभाग 'ब' से **तीन** प्रश्नों के उत्तर लिखने होंगे, जिनमें संसदर्भ व्याख्या का प्रश्न अनिवार्य होगा)

३. नाटक पर दीर्घोत्तरी प्रश्न
४. निबंध पर दीर्घोत्तरी प्रश्न
५. संस्मरण पर दीर्घोत्तरी प्रश्न
६. नाटक, निबंध, संस्मरण पर टिप्पणियाँ (३ में से २)
७. संसदर्भ व्याख्या (३ में से २)
   (क) नाटक अथवा नाटक
   (ख) निबंध अथवा निबंध
   (ग) संस्मरण अथवा संस्मरण।

प्र१

प्राचीन काव्य

उद्देश्य :

१. हिंदी का आदिकालीन, भक्तिकालीन तथा रीतिकालीन काव्य प्रवृत्तियों की जानकारी देना।
२. तत्कालीन कुछ प्रमुख कवियों की कुछ कृतियों के प्रत्यक्ष अध्ययन द्वारा उक्त काव्य से साक्षात्कार कराना।
३. पाठ्य कवियों की कृतियों के आधार पर समीक्षण की क्षमता बढ़ाना।

अध्यापन पद्धति :

१. व्याख्यान तथा विश्लेषण
२. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा
३. दृक्-श्राव्य माध्यमों / साधनों का प्रयोग
४. अध्ययन यात्रा
५. विशेषज्ञों के अतिथि व्याख्यान।

पाठ्यक्रम में निर्धारित कवि :

१.	विद्यापति	२.	मलिक मुहम्मद जायसी
३.	कबीर	४.	सूरदास
५.	बिहारी	६.	भूषण

सूचनाएँ :

१. प्रथम सत्र में तीन और द्वितीय सत्र में तीन कवियों का अध्ययन किया जाएगा।
२. प्रत्येक सत्र की परीक्षामें निर्धारित पाठ्यांश में से ससंदर्भ व्याख्या के लिए प्रश्न अनिवार्य रूप से होगा।
३. निर्धारित कवियों की रचनाओं का अध्ययन तत्कालीन काव्य-प्रवृत्तियों के परिप्रेक्ष्य में अपेक्षित है।

पाठ्यक्रम :

प्रथम सत्र

१. **विद्यापति : संपादक :** डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित, **प्रकाशकः** दिव्या प्रकाशन, पाटनकर बाजार, ग्वालियर-४७४००१, पद क्रमांक : १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १३, २०, २१, २५, २६, ५२, ५४, ५८, ५९, ६१, ६२, ६४, ६८, ७२, ७५, ७७=२५)

अध्ययनार्थ विषय :

१. विद्यापति : संयोग शृंगार
२. वियोग शृंगार
३. भक्ति भावना
४. विद्यापति : भक्त कवि या शृंगारी कवि
५. विद्यापति के काव्य में सौंदर्य चित्रण
६. प्रकृति चित्रण
७. विद्यापति के काव्य में गीति पद्धति
८. काव्य कला
९. विद्यापति के काव्य की देन
१०. विद्यापति के काव्य में अलंकार योजना
११. विद्यापति के काव्य पर संस्कृत साहित्य का प्रभाव
१२. विद्यापति की भाषा

२. **पद्मावत** : मालिक मुहम्मद जायसी, **संपादक :** वासुदेवशरण अग्रवाल, **प्रकाशक :** साहित्य सदन, चिरगाँव, झांसी

अध्ययनार्थ खंड :

सिंहलद्वीप खंड

मानसरोवर खंड

नागमती वियोग खंड

अध्ययनार्थ विषय :

१. इतिहास और कल्पना
२. प्रेमभाव
३. सौंदर्यवर्णन
४. शृंगार वर्णन : संयोग तथा वियोग
५. रहस्यभावना
६. प्रकृति चित्रण
७. चरित्र चित्रण
८. महाकाव्यत्व
९. सूफी दर्शन
१०. लोकतत्त्व
११. जायसी का काव्य कला
१२. हिंदी साहित्य में जायसी का स्थान

३. **कबीर : संपादक :** हजारीप्रसाद द्विवेदी, **प्रकाशक :** राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., १-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली ११० ००२, दोहा : क्र. १६० से २०९

अध्ययनार्थ विषय :

१. कबीर की रहस्यानुभूति और प्रेम
२. कबीर की दार्शनिक विचारधारा
३. कबीर की भाषा
४. हिंदी साहित्य में कबीर का स्थान
५. कबीर काव्य की प्रासंगिकता
६. कबीर के निर्गुण राम का स्वरूप
७. कबीर के राम
८. कबीर का विद्रोह
९. कबीर का कवित्व–भाषा, शैली, अलंकार, छंद
१०. कबीर का काव्य में समन्वय

द्वितीय सत्र

४. **सूरदास : भ्रमरगीत सार : संपादक :** आचार्य रामचंद्र शुक्ल और पं. विश्वनाथप्रसाद मिश्र, प्रकाशक : लोकभारती प्रकाशन, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद-१.

पद : २१ से ७०

अध्ययनार्थ विषय :

१. भ्रमरगीत की दार्शनिक पृष्ठभूमि
२. सूर काव्य में योग बनाम भक्ति
३. सूर काव्य में वियोग वर्णन
४. भ्रमरगीत : एक उपालंभ काव्य
५. सूर की गोपियाँ, सूर के उद्धव
६. सूर की काव्य कला
७. सूर-काव्य में अलंकार, छंद
८. सूर की भाषा
९. सूर का वागवैदग्ध्य
१०. भ्रमरगीत में व्यंजना

५. **बिहारी प्रकाशन : संपादक** : विश्वनाथप्रसाद मिश्र, **प्रकाशकः** लोकभारती प्रकाशन, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद **(अध्ययन के लिए सभी दोहे)**

अध्ययनार्थ विषय :

१. संयोग शृंगार
२. वियोग शृंगार
३. प्रसंगोद्भावना
४. सौंदर्य-चित्रण
५. सतसई-परंपरा
६. बिहार की अनुभाव योजना

७. शृंगारेतर भावना : भक्ति, नीति
८. काव्य-रूप : मुक्तक
९. काव्य-सौंदर्य
१०. हिंदी साहित्य में बिहारी का स्थान ।

५. **संक्षिप्त भूषण : संपादक :** डॉ. भगवानदास तिवारी, **प्रकाशक :** साहित्य भवन प्रा. लि., ९३, जीरो रोड, इलाहाबाद-२११०३
केवल निम्नलिखित छंद : १७, २०, २३, २६, २८, ३०, ३३, ३५, ४१, ४३, ४७, ४९, ६१, ६८, ७२, ७९, ९१, ९५=कुल २०

अध्ययनार्थ विषय :

१. युगचेतना और भूषण
२. भूषण-काव्य में शिवचरित्र और छत्रसाल वर्णन
३. भूषण-काव्य में रस
४. भूषण-काव्य में अलंकार, छंद
५. भूषण की काव्य-कला
६. भाषा-शैली
७. भूषण-काव्य में राष्ट्रीयता
८. भूषण का काव्य में स्थान।

संदर्भ ग्रंथ :

१. विद्यापति की काव्य प्रतिभा — डॉ. गोविंदराव शर्मा
२. विद्यापति : युग और साहित्य — डॉ. अरविंद नारायण सिन्हा
३. विद्यापति : आलोचना और संग्रह — आनंदप्रकाश दीक्षित
४. विद्यापति और उनका काव्य — डॉ. शुभकार कपूर
५. विद्यापति (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)— डॉ. शिवप्रसाद सिंह

६. जायसी के पद्मावत का मूल्यांकन (साहित्य भवन, इलाहाबाद)– प्रो. हरेंद्रप्रसाद सिन्हा
७. महाकवि जायसी और उनका काव्य (लोकभारती प्रकाशन : इलाहाबाद) –– डॉ. इकबाल अहमद
८. मलिक मुहम्मद जायसी और उनका काव्य (साहित्य भवन, इलाहाबाद) –– डॉ. शिवसहाय पाठक
९. जायसी का पद्मावत-काव्य और दर्शन–डॉ. गोविंद त्रिगुणायत
१०. पद्मावत में काव्य, संस्कृति और दर्शन –– डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना
११. पद्मावत का काव्य–सौंदर्य–डॉ. चंद्रबली पाण्डये
१२. कबीर एक अनुशीलन––डॉ. रामकुमार वर्मा
१३. कबीर का रहस्यवाद––डॉ. रामकुमार वर्मा
१४. कबीर की विचारधारा––डॉ. गोविंद त्रिगुणायत
१५. कबीर ग्रंथावली (साहित्य भवन, इलाहाबाद)–– संपा. डॉ. माताप्रसाद गुप्त
१६. कबीर साहित्य की परख –– आ. परशुराम चतुर्वेदी
१७. कबीर मीमांसा (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)––डॉ.रामचंद्र तिवारी
१८. कबीर वचनामृत (प्रभात प्रकाशन, दिल्ली-२)––डॉ. विद्यानिवास मिश्र
१९. कबीर साधना और साहित्य–डॉ. प्रतापसिंह चौहान
२०. निर्गुण काव्यधारा और उसकी दार्शनिक पृष्ठभूमि–– डॉ. गोविंद त्रिगुणायत
२१. युग पुरुष कबीर––डॉ. रामचंद्र वर्मा
२२. कबीर––संपादक-विजयेंद्र स्नातक
२३. सूरदास और उनका साहित्य––डॉ. मुशीराम शर्मा
२४. भारतीय साधना और सूर-साहित्य––डॉ. हरवंशलाल शर्मा

२५. सूर की काव्य-कला––डॉ. मनमोहन गौतम
२६. सूर-साहित्य––डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी
२७. सूर की भाषा––डॉ. प्रेमनारायण टंडन
२८. कृष्णकाव्य और सूर : सांस्कृतिक संदर्भ –– डॉ. प्रेमशंकर
२९. सूरदास––डॉ. आचार्य रामचंद्र शुक्ल
३०. सूरदास : एक पुनरावलोकन (निराली प्रकाशन, पुणे)––डॉ. ओमप्रकाश शर्मा
३१. महाकवि सूरदास––डॉ. आचार्य नंददुलारे वाजपेयी
३२. सूरसाहित्य का छंद-शास्त्रीय अध्ययन––डॉ. गौरिशंकर मिश्र
३३. भ्रमरगीत का काव्य सौंदर्य––डॉ. सत्येंद्र पारीक
३४. भ्रमरगीत : एक अन्वेषण –– डॉ. सत्येंद्र
३५. सूर की गोपिका : एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन (स्मृति (इलाहाबाद)–डॉ. प्रभारानी भाटिया.
३६. सूरदास (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)––डॉ. ब्रजेश्वर वर्मा
३७. बिहारी सतसई का तुलनात्मक अध्ययन (ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली-७)––पं. पद्मसिंह शर्मा
३८. बिहारी और उनका साहित्य (भारत प्रकाशन मंदिर, अलीगढ़)––डॉ. हरवंशलाल शर्मा, डॉ. परमानंद शास्त्री
३९. बिहारी काव्य का मूल्यांकन (साहित्य भवन, प्रा. लि., इलाहाबाद)––डॉ. किशोरी लाल
४०. षट्कवि : विवेचनात्मक अध्ययन (निराली प्रकाशन, पुणे)––डॉ. ओमप्रकाश शर्मा
४१. सूर की मौलिकता (सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली)––डॉ. वेदप्रकाश शास्त्री
४२. महाकवि विद्यापति –– डॉ. कृष्णानंद पीयूष
४३. काव्य में कृष्ण-चरित (श्याम प्रकाशन, दिल्ली)––डॉ. जयंतीप्रसाद मिश्र।

प्रश्नपत्र का स्वरूप एवं अंक विभाजन
(सूचना : सभी प्रश्नों के लिए समान अंक होंगे)
प्रथम सत्र

(कुल अंक –– ६०)

१. विद्यापति पर दीर्घोत्तरी प्रश्न **अथवा** विद्यापति पर दीर्घोत्तरी प्रश्न।
२. जायसी पर दीर्घोत्तरी प्रश्न **अथवा** जायसी पर दीर्घोत्तरी प्रश्न।
३. कबीर पर दीर्घोत्तरी प्रश्न **अथवा** कबीर पर दीर्घोत्तरी प्रश्न।
४. ससंदर्भ व्याख्या :
   (अ) विद्यापती **अथवा** विद्यापति
   (आ) जायसी **अथवा** जायसी
   (इ) कबीर **अथवा** कबीर।

द्वितीय सत्र

विभाग 'अ' (कुल अंक –– ६०)

१. दीर्घोत्तरी प्रश्न––विद्यापति **अथवा** जायसी/विद्यापति
२. दीर्घोत्तरी प्रश्न––जायसी/कबीर **अथवा** कबीर

विभाग 'ब'

(विभाग 'ब' में से तीन प्रश्नों के उत्तर लिखने होंगे, जिनमें ससंदर्भ व्याख्या का प्रश्न

३. 'सूरदास' पर दीर्घोत्तरी प्रश्न ।
४. 'बिहारी' पर दीर्घोत्तरी प्रश्न।
५. 'भूषण' पर दीर्घोत्तरी प्रश्न।
६. टिप्पणियाँ (३ में से २)
   (सूरदास, बिहारी, भूषण)
७. ससंदर्भ व्याख्या ––
   (क) सूरदास **अथवा** सूरदास
   (ख) बिहारी **अथवा** बिहारी
   (ग) भूषण **अथवा** भूषण ।

प्र१

भारतीय एवं पाश्चात्त्य साहित्यशास्त्र तथा आलोचना

उद्देश्य :

१. छात्रों को भारतीय तथा पाश्चात्त्य साहित्यशास्त्र का परिचय देना।
२. भारतीय तथा पाश्चात्त्य साहित्यशास्त्र के विकासक्रम का परिचय देना।
३. भारतीय तथा पाश्चात्त्य साहित्यशास्त्र के सिद्धांतों का ज्ञान कराना।
४. भारतीय तथा पाश्चात्त्य साहित्यशास्त्र के सिद्धांतों में साम्य, वैषम्य एवं उसके कारणों का ज्ञान कराना।
५. नयी समीक्षा के सिद्धांतो का ज्ञान कराना।
६. आलोचना की विविध प्रणालियों तथा नयी अवधारणाओं का परिचय देना।
७. साहित्यशास्त्रीय अध्ययन के माध्यम से छात्रों में समीक्षात्मक दृष्टि विकसित करना।

अध्यापन पद्धति :

१. व्याख्यान तथा विश्लेषण
२. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा
३. दृक्-श्राव्य माध्यमों/साधनों का प्रयोग
४. परिचर्चा
५. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान ।

महत्त्वपूर्ण सूचनाः लिखित परीक्षा में भारतीय तथा पाश्चात्त्य साहित्यशास्त्र के विकासक्रम पर प्रश्न पूछा नहीं जाएगा ।

प्रथम सत्र

१. भारतीय साहित्यशास्त्र के विकासक्रम का संक्षिप्त परिचय ।

२. **रस सिद्धांत :**

रस का स्वरूप, भरतमुनि का रससूत्र, भट्टलोल्लट, शंकुक, भट्टनायक तथा अभिनवगुप्त द्वारा तत्संबंधी व्याख्याओं का विवेचन, साधारणीकरण की अवधारणा और उसके संबंध के भट्टनायक, अभिनवगुप्त, पंडितराज जगन्नाथ, आचार्य विश्वनाथ तथा आचार्य रामचंद्र शुक्ल के मतों का विवेचन, करुण रस की आस्वाद्यता, वर्तमान संदर्भ में रस सिद्धांत।

३. **अलंकार सिद्धांत :**

'अलंकार' शब्द की व्युत्पत्ति, अलंकार की परिभाषा, अलंकार सिद्धांत का स्वरूप, अलंकार ओर रस, काव्य में अलंकार का स्थान।

४. **रीति सिद्धांत :**

'रीति' शब्द की व्युत्पत्ति, रीति की परिभाषा, रीति के विविध पर्याय, रीतिभेद के आधार, रीतिभेद, रीति और गुण, रीति और शैली।

५. **ध्वनि सिद्धांत :**

'ध्वनि' शब्द की व्युत्पत्ति, ध्वनि की परिभाषा, ध्वनि और स्फोट सिद्धांत, ध्वनि और शब्दशक्ति।

ध्वनि के भेद-अभिधामूला, लक्षणामूला, संलक्ष्यक्रम व्यंग्य ध्वनि, असंलक्ष्यक्रम व्यंग्य ध्वनि, ध्वनि के आधार पर काव्य के भेद, ध्वनि सिद्धांत का महत्त्व।

६. **वक्रोक्ति सिद्धांत :**

'वक्रोक्ति' की परिभाषा, कुंतकपूर्व वक्रोक्ति विचार, वक्रोक्ति सिद्धांत का स्वरूप, वक्रोक्ति के भेद, वक्रोक्ति का महत्त्व।

७. **औचित्य का सिद्धांत :**

औचित्य का स्वरूप, आचार्य क्षेमेंद्र पूर्व औचित्य-विचार, आचार्य क्षेमेंद्र का औचित्य विचार, औचित्य के भेद, अन्य सिद्धांतों के संदर्भ में औचित्य का महत्त्व।

द्वितीय सत्र

८. पाश्चात्त्य काव्यशास्त्र के विकासक्रम का संक्षिप्त परिचय ।

९. अरस्तू के काव्य सिद्धांत :

अनुकरण सिद्धांत-अनुकरण की व्याख्या, प्लेटो और अरस्तू की अनुकरण विषयक संकल्पना, दोनों के अनुकरणविषयक विचारों की तुलना ।

विरेचन सिद्धांत-विरेचन (कॅथार्सिस) की अलग-अलग व्याख्याएँ, अरस्तु द्वारा विरेचन का स्वरूप, महत्त्व।

१०. **उदात्त सिद्धांत :**

लोंजाइनस द्वारा उदात्त की व्याख्या, सिद्धांत का स्वरूप, उदात्त के अंतरंग, बहिरंग, विरोधी तत्त्व, काव्य में उदात्त का महत्त्व।

११. **यथार्थवाद :**

यथार्थ का स्वरूप, आदर्श और यथार्थ, यथार्थवाद के भेद।

१२. **अभिव्यंजनावाद :**

क्रोचे की कलाविषयक धारणा, अंतःप्रज्ञा, अंतःप्रज्ञा और अभिव्यंजना का नित्य संबंध, अभिव्यंजना और कला का संबंध, अभिव्यंजनावाद और वक्रोक्ति सिद्धांत।

१३. **प्रतीकवाद :**

प्रतीकवाद का उद्भव, व्याख्या, व प्रतीकों का वर्गीकरण, प्रतीकवाद का महत्त्व एवं सीमाएँ, हिंदी साहित्य पर प्रभाव।

१४. **बिंबवाद :**

बिंबवाद का उद्भव, बिंबवादियों के अनुसार काव्यबिंब की व्याख्या, काव्य में बिंब का महत्त्व, बिंबो का वर्गीकरण, बिंब और प्रतीक की तुलना ।

१५. **मनोवैज्ञानिक मूल्यवाद और संप्रेषण सिद्धांत :**

काव्यमूल्यों की मनोवैज्ञानिक व्याख्या, मनोवेगों के दो प्रकार, मनोवेगों में संतुलन।

संप्रेषण का स्वरूप, महत्त्व, आइ. ए. रिर्चडस् का योगदान ।

१६. **निर्वैयक्तिकता सिद्धांत और वस्तुनिष्ठ प्रतिरूपता सिद्धांत :**

इलियट की निर्वैयक्तिकता संबंधी धारणा, परिवर्तित धारणा, व्यक्तिगत भावों का समान्यीकरण।

वस्तुनिष्ठ प्रतिरूपता सिद्धांत का स्वरूप, भावविधान, भावप्रदर्शन प्रणाली, भारतीय काव्यशास्त्र के साधारणीकरण से तुलना।

१७. **आलोचना :**

स्वरूप और उद्देश्य, आलोचक के गुण।

आलोचना की विभिन्न प्रणालियाँ : स्वच्छंदतावादी, मनोवैज्ञानिक, प्रगतिवादी आलोचना ।

संदर्भ ग्रंथ

१. भारतीय साहित्यशास्त्र, खंड १ आणि २––आचार्य बलदेव उपाध्याय

२. रीतिकाव्य की भूमिका–– डॉ. नगेंद्र

३. भारतीय काव्यशास्त्र––डॉ. सत्यदेव चौधरी

४. भारतीय काव्याशास्त्र की भूमिका ––डॉ. नगेंद्र

५. साहित्यशास्त्र के प्रमुख सिद्धांत –– डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी

६. काव्यशास्त्र––डॉ. भगीरथ मिश्र

७. भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्धांत––डॉ. कृष्णदेव शर्मा

८. शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धांत, भाग १ व २––डॉ. गोविंद त्रिगुणायत

९. रस सिद्धांत : स्वरूप विश्लेषण––डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित
१०. भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्धांत––डॉ. कृष्णदेव झारी
११. ध्वनि संप्रदाय और उसके सिद्धांत––डॉ. बच्चूलाल अवस्थी
१२. औचित्य विमर्श––डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी
१३. अरस्तू का काव्यशास्त्र––डॉ. नगेंद्र
१४. उदात्त के विषय में –– डॉ. निर्मला जैन
१५. समीक्षालोक ––डॉ. भगीरथ दीक्षित
१६. पाश्चात्त्य काव्यशास्त्र –– डॉ. भगीरथ मिश्र
१७. पाश्चात्त्य के सिद्धांत ––डॉ. कृष्णदेव शर्मा
१८. पाश्चात्त्य साहित्य चिंतन : विकास क्रम –– डॉ. निर्मला जैन, कुसुम बांठिया
१९. नयी समीक्षा के प्रतिमान –– निर्मला जैन
२०. आधुनिक आलोचना के बीज शब्द –– बच्चन सिंह
२१. आधुनिकतावाद––डॉ. दुर्गाप्रसाद गुप्त
२२. पाश्चात्त्य काव्यशास्त्र के सिद्धांत––शांतिस्वरूप गुप्त
२३. पाश्चात्त्य काव्यशास्त्र के सिद्धांत––मैथिलीप्रसाद भारद्वाज
२४. उत्तर आधुनिकता और उत्तर संरचनावाद –– सुधीर पचौरी
२५. पाश्चात्त्य काव्यशास्त्र का तुलनात्मक अध्ययन ––डॉ. बच्चन सिंह
२६. भारतीय एवं पाश्चात्त्य काव्यशास्त्र का तुलनात्मक अध्ययन–– डॉ. बच्चन सिंह
२७. आधुनिक समीक्षा –– डॉ. भगवत्स्वरूप मिश्र
२८. आलोचना के बदलते मानदंड और हिंदी साहित्य –– डॉ. शिवचरण सिंह
२९. भारतीय तथा पाश्चात्त्य काव्यशास्त्र (अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर)–– डॉ. सुरेश कुमार जैन और प्रा. महावीर कंडारकर
३०. पाश्चात्त्य साहित्य सिद्धांत विवेचन (निराली प्रकाशन, पुणे) –– डॉ. ओमप्रकाश शर्मा ।

प्र१

(**सूचना** : सभी प्रश्नों के लिए समान अंक होंगे)

प्रथम सत्र

(कुल अंक—६०)

प्रथम सत्र के पाठ्यक्रम पर कुल **सात** दीर्घोत्तरी प्रश्न होंगे तथा **आठवाँ** प्रश्न टिप्पणियों (केवल दो टिप्पणियाँ) का होगा। केवल चार प्रश्नों के उत्तर लिखने होंगे।

द्वितीय सत्र

(कुल अंक — ६०)

विभाग 'अ'

'अ' विभाग में प्रथम सत्र के पाठ्यक्रम पर आधारित **तीन** दीर्घोत्तरी प्रश्न तथा **चौथा** प्रश्न टिप्पणियों (४ में से २) का होगा। केवल दो प्रश्नों के उत्तर लिखने होंगे।

विभाग 'ब'

विभाग 'ब' में द्वितीय सत्र के पाठ्यक्रम पर आधारित **चार** दीर्घोत्तरी प्रश्न **एक** टिप्पणियों (४ में से २) का होगा।

केवल दो प्रश्नों के उत्तर लिखने होंगे।

प्र१

(अ) विशेष साहित्यकार : तुलसीदास

उद्देश्य :

१. तत्कालीन परिस्थितियाँ (दार्शनिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक) के परिप्रेक्ष्य में तुलसीदास के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय देते हुए हिंदी को उनके प्रदेय की जानकारी देना।

२. तुलसीदास की काव्यगत शक्ति और सीमाओं से परिचित कराना।

३. तुलसीदास की काव्य की प्रासंगिकता से अवगत करना।

अध्ययन पद्धति।

१. व्याख्यान तथा विश्लेषण

२. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा

३. दृक्-श्राव्य माध्यमों/साधनों का प्रयोग

४. परिचर्चा।

५. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान ।

पाठ्यग्रंथ :

१. **श्रीरामचरित मानस :** प्रकाशक : गीता प्रेस, गोरखपुर, सं. २०५२, पचासवाँ संस्करण

२. **विनयपत्रिका :** संपा. : वियोगी हरि, प्रकाशक : सस्ता साहित्य मंडल, एन-७७, कनाट सर्कस, नई दिल्ली-११० ००१

३. **कवितावली :** संपा. : लाला भगवानदीन/विश्वनाथप्रसाद मिश्र, प्रकाशक : रामनाथ वेनीप्रसाद, इलाहाबाद-२

प्रथम सत्र

१. **श्रीरामचरितमानस :** केवल अयोध्याकांड, पृष्ठ क्रमांक-२८७ से ३९३ तक (प्रारंभिक श्लोक से दोहा क्र. १०३ तक)

अध्ययनार्थ विषय :

१. तुलसीदास : जीवन वृत्त एवं कृतित्व

२. तुलसा की भक्ति पद्धति

३. मर्यादावाद

४. समन्वय साधना

५. चरित्र चित्रण

६. प्रकृति चित्रण
७. भाषा शैली
८. दार्शनकिता
९. महाकाव्यत्व
१०. तुलसीदास का हिंदी साहित्य में स्थान

२. **विनय पत्रिका :** पद क्रमांक १ से ५० तक

अध्ययनार्थ विषय :

१. विनयपत्रिका का हेतु
२. दार्शनिकता
३. विनयपत्रिका की विशेषताएँ
४. रस योजना एवं भावात्मकता
५. कवित्व
६. भाषा
७. गीतात्मकता
८. भक्तिकाव्य में विनयपत्रिका का स्थान
९. विनय पत्रिका में अलंकार तथा छंद योजना।

द्वितीय सत्र

१. **श्रीरामचरितमानस :** केवल उत्तरकांड

अध्ययनार्थ विषय :

१. तुलसी की सामाजिक दृष्टि
२. लोकमंगल की दृष्टि
३. तुलसी का लोकनायकत्व

४. रस व्यंजना
५. आस्थाएँ
६. लोकसंस्कृति
७. नीति सिद्धांत
८. जीवनमूल्य
९. रामचरितमानस के संवाद
१०. तुलसी काव्य की प्रासंगिकता

२. **विनयपत्रिका** : पद क्रमांक ५१ से १०० तक

३. **कवितावली** : केवल बालकांड तथा सुंदर कांड

अध्ययनार्थ विषय :

१. विनयपत्रिका की विनय
२. विनयपत्रिका में तुलसी का मन को दिया गया उद्बोधन
३. विनयपत्रिका के स्तोत्र
४. राम का उदात्त चरित्र
५. रामायण के अन्य पात्र
६. तुलसी के मायासंबंधी विचार
७. तुलसी के आध्यात्मिक विचार
८. कवितावली की विशेषताएँ
९. कवितावली की वर्णन शैली

(सूचना : दोनों सत्रों के प्रश्न व्याख्या का प्रश्न

संदर्भ ग्रंथ :

१. तुलसी और उनका काव्य—डॉ. उदयभानु सिंह
२. तुलसी काव्य-मीमांसा—डॉ. उदयभानु सिंह
३. रामचरित मानस में भक्ति—डॉ. सत्यनारायण शर्मा
४. रामचरित मानस : तुलनात्मक अनुशीलन—डॉ. सज्जनराम केणी

५. तुलसीदास : चिंतन और कला—सं. डॉ. इंद्रनाथ मदान
६. तुलसीदास और उनका युग—डॉ. राजपति दीक्षित
७. तुलसी का मानस—मुन्शीराम शर्मा
८. तुलसी की जीवनभूमि—डॉ. चंद्रबली पांडेय
९. रामचरित मानस : अयोध्याकांड—डॉ. योगेंद्र प्रताप सिंह
१०. तुलसी काव्य का सांस्कृतिक अध्ययन—डॉ. जितेंद्रनाथ पांडेय
११. विनयपत्रिका : एक तुलनात्मक अध्ययन—डॉ. ओंकारप्रसाद त्रिपाठी
१२. विनयपत्रिका आलोचना एवं भाष्य—डॉ. गोपीनाथ तिवारी
१३. विनयपत्रिका : दार्शनिक तथा कलात्मक विवेचन—डॉ. राजकुमार अवस्थी
१४. गोस्वामी तुलसीदास—डॉ. अशोक कामत
१५. तुलसी का काव्य सौंदर्य—डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी
१६. तुलसी साहित्य की भूमिका—रामरतन भटनागर
१७. लोककवि तुलसी—डॉ. सरला शुक्ल
१८. गोस्वामी तुलसीदास—डॉ. मायाप्रसाद पांडेय
१९. तुलसी की भाषा—जनार्दन सिंह
२०. तुलसीदास : काव्य, कला और दर्शन—डॉ. रामगोपाल शर्मा

प्रश्न

(**सूचना** : सभी प्रश्नों के लिए समान अंक होंगे)

प्रथम सत्र

(कुल अंक — ६०)

प्रथम सत्र के पाठ्यक्रम पर आधारित सात दीर्घोत्तरी प्रश्न होंगे, जिनमें से **तीन** प्रश्नों के उत्तर लिखने होंगे। **आठवाँ** ससंदर्भ व्याख्या (६ में से ३) का प्रश्न अनिवार्य होगा।

विभाग 'अ'

प्रथम सत्र के पाठ्यक्रम पर आधारित **तीन** दीर्घोत्तरी तथा **एक** टिप्पणियों (४ में से २) का प्रश्न होगा। इनमें से **दो** प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

विभाग 'ब'

विभाग 'ब' में कुल **पाँच** प्रश्न होंगे जिनमें से **एक** टिप्पणियों (४ में से २) का होगा तथा **एक** ससंदर्भ व्याख्या का (४ में से २) प्रश्न होगा। ससंदर्भ व्याख्या का प्रश्न **अनिवार्य** होगा।

प्रश्न

(आ) विशेष साहित्य प्रकार : नाटककार शंकर शेष

उद्देश्य :

१. भारतीय एवं पाश्चात्त्य दृष्टि से नाटक के स्वरूप और तत्त्वों का परिचय देना।

२. विषय, शिल्प, भाषा, मंचीय प्रयोग आदि आधारों पर नाटक के विविध प्रकारों से परिचित कराना।

३. हिंदी नाट्य-साहित्य के विकासक्रम की जानकारी देना।

४. शंकरण शेष के नाटकों के अध्ययन के आधार पर उनकी नाट्यकला से परिचित कराना।

५. हिंदी नाट्य-साहित्य में शंकर शेष के स्थान से अवगत कराना।

अध्ययन पद्धति :

१. व्याख्यान तथा विश्लेषण

२. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा

३. दृक्-श्राव्य माध्यमों/साधनों का प्रयोग

४. नाट्य/दृश्यों का मंचन

५. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान।

पाठ्यनाटक :

प्रथम सत्र में **'खजुराहो का शिल्पी', 'फंदी', 'एक और द्रोणाचार्य'** - नाटकों का विशेष अध्ययन तथा अन्य सभी नाटकों का सामान्य परिचय अपेक्षित है।

द्वितीय सत्र में 'रक्तबीज', 'पोस्टर', 'कोमल गांधार' - नाटकों का विशेष अध्ययन अपेक्षित है।

प्रथम सत्र

अध्ययनार्थ विषय :

१. भारतीय एवं पाश्चात्त्य दृष्टि से नाटक के स्वरूप एवं तत्त्वों का परिचय; विषय, शिल्प, भाषा, मंचीय प्रयोग आदि आधारों पर नाटक के विविध प्रकारों का परिचय।

२. हिंदी नाट्य-साहित्य के विकासक्रम का परिचय, शंकर शेष पूर्व हिंदी नाटक (भारतेंदु युग, प्रसाद युग, प्रसादोत्तर हिंदी नाटक, स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटक)।

३. शंकर शेष के सभी नाटकों का सामान्य परिचय।

४. **'खजुराहो का शिल्प'** का अध्ययन (विषय, शिल्प, भाषा, मंचीयता, नूतन प्रयोग की दृष्टि से)।

५. **'फंदो'** का अध्ययन (विषय, शिल्प, भाषा, मंचीयता की दृष्टि से)।

६. **'एक और द्रोणाचार्य'** का अध्ययन (विषय, शिल्प, भाषा, मंचीयता, नूतन प्रयोग की दृष्टि से)।

द्वितीय सत्र

७. **'रक्तबीज'** अध्ययन (विषय, शिल्प, भाविक सरंचना, मंचन, नूतन प्रयोग आदि दृष्टियों से)।

८. **'पोस्टर'** का अध्ययन (विषय, शिल्प, भाषिक संरचना, मंचन, नूतन प्रयोग आदि आधारों पर)।

९. **'कोमल गांधार'** का अध्ययन (विषय, शिल्प, भाषिक संरचना, मंचन, नूतन प्रयोग आदि विविध पक्षों को ध्यान में रखते हुए)।

१०. समस्या प्रधान तथा प्रयोगशील हिंदी नाट्य-धारा के परिप्रेक्ष्य में शंकर शेष के नाटकों का अध्ययन एवं समीक्षा।

११. निम्नलिखित मुद्दों के संदर्भ में शंकर शेष के नाट्य-साहित्य की समीक्षा :

(क) युगबोध

(ख) परिवर्तित मूल्य और उनकी प्रस्तुति

(ग) चरित्र चित्रण आणि मनोविज्ञान

(घ) मंचीयता

(च) प्रयोगविषयक सजगता

(छ) अन्य भाषा के नाट्य-साहित्य का प्रभाव

१२. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाट्य-साहित्य को शंकर शेष का प्रदेय।

संदर्भ ग्रंथ

१. हिंदी नाटक सिद्धांत और विवेचन—गिरीश रस्तोगी
२. नाटक और रंगमंच की भूमिका—डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल
३. हिंदी नाटककार—जयनाथ नलिन
४. हिंदी नाटक : प्रगति और प्रभाव—डॉ. दशरथ ओझा
५. आधुनिक हिंदी नाटक—डॉ. नगेंद्र
६. हिंदी नाटक साहित्य——डॉ. वेदपाल खन्ना
७. हिंदी नाटकों की शिल्प-विधि का विकास–डॉ. शांति मलिक
८. हिंदी नाटक : पहचान और परख—इंद्रनाथ मदान
९. नाटक की साहित्यिक संरचना—गोविंद चातक
१०. आधुनिक हिंदी नाटकों में प्रयोगधर्मिता—डॉ. सत्यवती त्रिपाठी
११. रंगमंच-कला और दृष्टि—गोविंद चातक
१२. नई रंग चेतना और हिंदी नाटककार—जयदेव तनेजा
१३. समकालीन नाट्य-विवेचन—डॉ. माधव सोनटक्के
१४. आज के हिंदी रंग नाटक (परिवेश और परिदृश्य)—जयदेव तनेजा
१५. आधुनिक हिंदी नाटक एक यात्रा दशक (१९६९-१९७८)—— डॉ. नरनारायण राय
१६. डॉ. शंकर शेष का नाटक साहित्य—डॉ. प्रकाश जाधव
१७. नाटककार शंकर शेष—डॉ. सुनीलकुमार लवटे
१८. प्रयोगशील नाटककार शंकर शेष—डॉ. मधुकर हसबनीस
१९. नटशिल्पी शंकर शेष–डॉ. सुरेश गौतम, डॉ. वीणा गौतम
२०. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटक-डॉ. रीता कुमार
२१. आधुनिक हिंदी नाटक—डॉ. गोविंद चातक
२२. समकालीन हिंदी नाटककार—गिरीश रस्तोगी
२३. मिथक और स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटक—रमेश गौतम
२४. समसामायकि हिंदी नाटकों में खंडित व्यक्तित्व अंकन—— डॉ. टी. आर. पाटील।

प्रश्न

(**सूचना** : सभी प्रश्नों के लिए समान अंक होंगे)

(कुल अंक—६०)

प्रथम सत्र

प्रथम सत्र के पाठ्यक्रम पर आधारित कुल **आठ** प्रश्न पुछे जाएँगे, जिनमें **सात** दीर्घोत्तरी प्रश्न होंगे तथा **आठवाँ** प्रश्न टिप्पणियों का होगा। इनमें से किन्ही **चार** प्रश्नों के उत्तर लिखने होंगे।

द्वितीय सत्र

(कुल अंक ——६०)

विभाग 'अ'

प्रथम सत्र के पाठ्यक्रम पर आधारित कुल **चार** प्रश्न पूछे जाएँगे, जिनमें से किन्ही **दो** प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

विभाग 'ब'

द्वितीय सत्र के पाठ्यक्रम पर आधारित कुल **चार** दीर्घोत्तरी तथा **एक** टिप्पणियों (४ में से २) का प्रश्न होगा । इनमें से किन्ही **तीन** प्रश्नों के उत्तर लिखने होंगे।

प्रश्न

(इ) विशेष साहित्यकार : कवि निराला

उद्देश्य :

१. छात्रों को विशेष साहित्यकार के रूप में कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के साहित्यिक व्यक्तित्व का परिचय देना।
२. युगीन पृष्ठभूमि के परिप्रेक्ष्य में 'निराला' की काव्य-प्रवृत्तियों का परिचय देना।
३. निर्धारित प्रमुख रचनाओं के सूक्ष्म अध्ययन तथा अन्य कृतियों के सामान्य अध्ययन के माध्यम से 'निराला' की काव्य-कला से परिचित कराना।

४. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की निर्धारित रचनाओं के आस्वादन एवं मूल्यांकन की दृष्टि देना।

५. कवि के रूप में सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के योगदान से परिचित कराना।

अध्यापन पद्धति :

१. व्याख्यान तथा विश्लेषण
२. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा
३. दृक्-श्राव्य माध्यमों/साधनों का प्रयोग
४. परिचर्चा
५. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान।

अध्ययनार्थ निर्धारित कृतियाँ :

१. **तुलसीदास :** प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन, प्रा. लि., १-बी नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-११० ००२

२. **गीतिका :** प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन, प्रा. लि., १-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-११० ००२

३. **परिमल :** प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., १-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-११० ००२

४. **अपरा :** प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., १-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-११० ००२

प्रथम सत्र

निर्धारित कृतियाँ :

१. **तुलसीदास**

२. **गीतिका**

केवल निम्नलिखित कविताएँ-

१. वर दे, वीणा वादिनी वर दे

२. मौन रही हार
३. आमरभर वरण-गान
४. बादल में आये जीवन-धन
५. लिखती सब कहते
६. याद रखना इतनी ही बात
७. धन्य कर दे माँ, वन्य प्रसून
८. मुझे स्नेह मिल न सकेगा
९. गई निशा वह, हँसी दिशाएँ
१०. भारती, जय विजय करे
११. दे मैं करूँ वरण
१२. प्रातः तव द्वार पर
१३. लाज लगे तो
१४. कैसी बजी बीन
१५. खुलती मेरी शेफाली

उपर्युक्त रचनाओं के सूक्ष्म अध्ययन के साथ-साथ निम्नलिखित विषयों की जानकारी अपेक्षित है —

१. छायावाद तथा निराला
२. निराला का काव्य सौष्ठव
३. निराला की काव्यानुभूति
४. देशप्रेम की रचनाएँ
५. सामाजिक विषमता के प्रति क्षुब्धता
६. युग निर्माण की अदम्य शक्ति।

द्वितीय सत्र

निर्धारित कृतियाँ :

१. परिमल :

केवल निम्नलिखित कविताएँ --

१. मौन	२. प्रार्थना
३. वासंती	४. प्रथम प्रभात
५. आदान प्रदान	६. भिक्षुक
७. संध्या सुंदरी	८. दीन
९. आवाहन	१०. विफल वासना
११. प्रपात के प्रति	१२. सिर्फ एक उन्माद
१३. जूही की कली	१४. जागो फिर एक बार-१
१५. जागो फिर एक बार-२	

२. अपरा :

केवल निम्नलिखित कविताएँ --

१. भारती वंदना	२. तोडती पत्थर
३. हिंदी के सुमनों के प्रति	४. नुपूर के स्वर मंद रहे
५. राम की शक्ति पूजा	६. विधवा
७. तुम और मैं	८. छत्रपति शिवाजी का पत्र
९. प्रताप के प्रति	१०. नाचे उस पार श्यामा
११. स्नेह निर्झर बह गया है	१२. सरोज स्मृति
१३. दलित जन पर करो करुणा	१४. भगवान बुद्ध के प्रति
१५. देवी सरस्वती	

उपर्युक्त रचनाओं के सूक्ष्म अध्ययन के साथ-साथ निम्नलिखित विषयों की जानकारी अपेक्षित है --

१. 'निराला' के काव्य में प्रकृति

२. 'निराला' की छंद योजना
३. 'निराला' का निरालापन
४. 'निराला' के काव्य में गीति तत्त्व
५. 'निराला' के काव्य का मूल्यांकन
६. 'निराला' के काव्य का भावपक्ष
७. 'निराला' के काव्य में नूतन अभिव्यंजना प्रणाली

(सूचना : दोनों सत्रों के प्रश्नपत्रों में निर्धारित कृतियों पर ससंदर्भ व्याख्या का प्रश्न)

संदर्भ ग्रंथ :

१. महाप्राण निराला—सूर्यप्रकाश दीक्षित
२. छायावादी कव्य और निराला—डॉ. शांति श्रीवास्तव
३. क्रांतिकारी कवि निराला—डॉ. बच्चन सिंह
४. कवि निराला : काव्य-कला और कृतियाँ–डॉ. विश्वंभरनाथ उपाध्याय
५. महाप्राण निराला—लक्ष्मण प्रसाद सिन्हा
६. निराला का साहित्य चिंतन——डॉ. स्नेहलता इंदवार
७. निराला काव्य में मानवीय चेतना—रमेश दत्त मिश्र
८. कला-सृजन-प्रक्रिया और निराला—शिवकरण सिंह
९. निरालाकृत तुलसीदास—— रामानुज गिलडा
१०. छायावादी काव्य में सौंदर्य दर्शन—सुरेशचंद्र त्यागी
११. निराला काव्य के विविध आयाम (तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली—— डॉ. इंद्रराज सिंह
१२. निराला का गीत काव्य (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)—— डॉ. संध्या सिंह।

प्र१

(**सूचना** : सभी प्रश्नों के लिए समान अंक होंगे)

प्रथम सत्र

(कुल अंक — ६०)

प्रथम सत्र के पाठ्यक्रम पर आधारित **छः** दीर्घोत्तरी प्रश्न होंगे तथा **एक** टिप्पणियों का प्रश्न होगा। इनमें से किन्ही **तीन** प्रश्नों के उत्तर लिखने होंगे। **आठवाँ** प्रश्न ससंदर्भ व्याख्या का **अनिवार्य** होगा, जिसमें अंतर्गत विकल्प होंगे।

द्वितीय सत्र

विभाग 'अ'

(कुल अंक — ६०)

प्रथम सत्र के पाठ्यक्रम पर आधारित कुल **तीन** दीर्घोत्तरी तथा **एक** टिप्पणियों का प्रश्न होगा। इनमें से किन्ही **दो** प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

विभाग 'ब'

द्वितीय सत्र के पाठ्यक्रम पर आधारित कुल **चार** दीर्घोत्तरी प्रश्नों में से **दो** के उत्तर अपेक्षित हैं। प्रश्न क्र. ९ ससंदर्भ व्याख्या का **अनिवार्य** होगा, जिसमें अंतर्गत विकल्प होंगे।

प्र१

(ई) विशेष विधा-हिंदी उपन्यास

उद्देश्य :

१. उपन्यास विधा के तात्त्विक स्वरूप की जानकारी देना।
२. उपन्यास तथा अन्य साहित्यिक विधाओं का तुलनात्मक परिचय देना।
३. हिंदी उपन्यासों के विकासक्रम की जानकारी देना।

४. हिंदी उपन्यासों की विभिन्न प्रवृत्तियों से परिचित कराना।

५. हिंदी उपन्यासों के तात्त्विक स्वरूप एवं विकासक्रम के परिप्रेक्ष्य में उपन्यासों के आस्वादन, अध्ययन एवं मूल्यांकन की क्षमता बढ़ाना।

अध्यापन पद्धति :

१. व्याख्यान तथा विश्लेषण
२. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा
३. दृक्-श्राव्य माध्यमों/साधनों का प्रयोग
४. परिचर्चा
५. अतिथि विदवानों के व्याख्यान।

विशेष अध्ययन के लिए उपन्यास

१. **परीक्षा गुरु :** लाला श्रीनिवासदास
२. **चंद्रकांता :** देवकीनंदन खत्री : प्रकाशक : भारतीय ग्रंथ निकेतन, २७१३, कूचाचेलान, दरियागज, नई दिल्ली
३. **गोदान :** प्रेमचंद : प्रकाशक : सरस्वती प्रेस, २/४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-११० ००२
४. **बाणभट्ट की आत्मकथा :** डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी, प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., १-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-११० ००२
५. **मैला आँचल :** फणीश्वरनाथ 'रेणु', प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., १-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-११० ००२
६. **शेखर–(एक जीवनी) भाग १ व २-** 'अज्ञेय', प्रकाशक : नेशनल पब्लिशिंग हाउस, २३, दरियागंज, नई दिल्ली-११० ००२
७. **अलग अलग वैतरणी :** शिवप्रसाद सिंह, प्रकाशक : राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., जी-१७, जनकपुरी, दिल्ली

८. **अग्निबीज** : मार्कंडेय : प्रकाशक : लोकभारती प्रकाशन, १५-ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद-१

९. **चाक** : पुष्पा मैत्रेयी : प्रकाशक, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., १-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-११० ००२

प्रथम सत्र

अध्ययनार्थ विषय :

१. उपन्यास की परिभाषा, स्वरूप, उपन्यास के तत्त्व।
शिल्पविधान उपन्यास तथा कथात्मक विधाएँ।
––उपन्यास ओर कहानी, उपन्यास और नाटक,
उपन्यास और महाकाव्य, उपन्यास और जीवनी।

२. हिंदी उपन्यास का विकास — प्रेमचंद पूर्व, प्रेमचंद कालीन और प्रेमचंदोत्तर (सन १९६० तक) साठोत्तर हिंदी उपन्यास।

३. हिंदी उपन्यासों की प्रवृत्तियाँ––जासूसी, तिलस्मी, सामाजिक, राजनीतिक, आंचलिक, मनोवैज्ञानिक, ऐतिहासिक, जीवनीपरक।

४. उपन्यास की विविध शैलियाँ—वर्णानात्मक, आत्मकथात्मक, पत्रशैली, डायरी शेली, पूर्वदीप्ति, चेतनाप्रवाह, मिश्र शैली।

५. (१) परीक्षा गुरु, (२) चंद्रकांता, (३) गोदान
उपन्यास का विशेष अध्ययन ।

द्वितीय सत्र

१. बाणभट्ट की आत्मकथा

२. मैला आँचल

३. शेखर-(एक जीवनी)-भाग १ व २

४. अलग अलग वैतरणी

५. अग्निबीज

६. चाक

आदि उपन्यासों का विशेष अध्ययन।

संदर्भ ग्रंथ :

१. हिंदी उपन्यास उद्‌भव और विकास--सुरेश सिन्हा
२. हिंदी उपन्यास--रामदरश मिश्र
३. उपन्यास का शिल्प -- गोपाल राय
४. प्रेमचंदोत्तर उपन्यासों की शिल्पविधि--डॉ. सत्यपाल चुप
५. हिंदी उपन्यास : शिल्प और प्रयोग--डॉ. त्रिभुवन सिंह
६. हिंदी उपन्यास की शिल्पविधि का विकास--प्रेमबिहारीलाल भटनागर
७. उपन्यास : स्थिति और गति--डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर
८. ऐतिहासिक उपन्यास : प्रकृति और स्वरूप--संपा. गोविंद जी
९. आधुनिक उपन्यास : विविध आयाम--विवेकी राय
१०. हिंदी उपन्यास सृजन और सिद्‌धांत--नरेंद्र कोहली
११. गोदान : संवेदना और शिल्प-- डॉ. चंद्रेश्वर कर्ण
१२. हिंदी उपन्यास और यथार्थवाद--डॉ. त्रिभुवन सिंह
१३. हिंदी उपन्यास एक सर्वेक्षण--महेंद्र चतुर्वेदी
१४. हिंदी के आँचलिक उपन्यास--सं. डॉ. रामदरश मिश्र
१५. हिंदी के आँचलिक उपन्यास : सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ--दीपशंकर नागर
१६. स्वातंत्र्योत्तर आँचलिक उपन्यास--सुभाषिणी शर्मा
१७. मैला आँचल-शिल्प और दृष्टि--बदरीप्रसाद
१८. मैला आँचल की रचना प्रक्रिया--देवेश ठाकुर
१९. साठोत्तरी उपन्यासों में राजनीतिक चेतना--कृष्णकुमार बिरला
२०. समकालीन हिंदी उपन्यास--रामविनोद सिंह
२१. प्रेमचंद के उपन्यासों में स्त्री-पुरुष संबंध (अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर)--डॉ. भाऊसाहेब गवली ।

प्र१

(**सूचना** : सभी प्रश्नो के लिए समान अंक होंगे)

प्रथम सत्र

(कुल अंक —६०)

प्रथम सत्र के पाठ्यक्रम पर आधारित **सात** दीर्घोत्तरी तथा **एक** टिप्पणियों का प्रश्न होगा। इनमें से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

द्वितीय सत्र

विभाग 'अ'

(कुल अंक —६०)

प्रथम सत्र के पाठ्यक्रम पर आधारित कुल **तीन** दीर्घोत्तरी तथा **एक** टिप्पणियों का प्रश्न होगा। इनमें से किन्ही **दो** प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

विभाग 'ब'

द्वितीय सत्र के पाठ्यक्रम पर आधारित **चार** दीर्घोत्तरी तथा एक टिप्पणियाँ का प्रश्न होगा। इनमें से **तीन** प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

प्र१

(उ) विशेष विधा-हिंदी नाटक और रंगमंच

उद्देश्य :

१. नाटक की संरचना और साहित्य की अन्य विधाओं के संदर्भ में नाटक की विशिष्टता से परिचित कराना।

२. नाटक की संरचना के परिप्रेक्ष्य में रचनाओं के आस्वादन और अध्ययन की प्रेरणा देना.

३. हिंदी नाट्य साहित्य और रंगमंच के विकासक्रम की जानकारी देना।

४. नाटक के ऐतिहासिक विकास के परिप्रेक्ष्य में रचनाओं का आस्वादन अध्ययन ओर मूल्यांकन की क्षमता बढ़ाना।

५. अन्य भाषाओं के अनूदित नाटको से छात्रों को परिचित कराना।

अध्यापन पद्धति :

१. व्याख्यान तथा विश्लेषण

२. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा

३. दृक्-श्राव्य माध्यमों/साधनों का प्रयोग

४. नाटकों/अंकों का मंचन

५. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान/प्रात्यक्षिक।

स्थूल अध्ययन के लिए नाटक :

१. **अंधेर नगरी :** भारतेंदु हरिश्चंद्र

२. **ध्रुवस्वामिनी :** जयशंकर प्रसाद : प्रकाशक : लोकभारती प्रकाशन, १५, ए, म. गांधी मार्ग, इलाहाबाद-१.

३. **कोणार्क :** जगदीशचंद्र माथुर : प्रकाशक : राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि. जी-१७, जनकपुरी, दिल्ली-११००५१

४. **कर्फ्यू :** लक्ष्मीनारायण लाल : (१) राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, नई दिल्ली, (२) प्रकाशक : लोकभारती प्रकाशन, १५-ए, ३. गांधी मार्ग, इलाहाबाद-१

५. **आधे अधूरे :** मोहन राकेश : प्रकाशक : राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., जी-१७, जनकपुरी, दिल्ली-११००५१

६. **आठवाँ सर्ग :** सुरेंद्र वर्मा : प्रकाशक : राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., जी-१७, जनकपुरी, दिल्ली-११००५१

७. **कबिरा खड़ा बजार में :** भीष्म सहानी : प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., १-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२

८. **अब गरीबी हटाओं :** सर्वेश्वरदयाल सक्सेना : प्रकाशक : वाणी प्रकाशन, ४६९७/५, २१, ए. अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२

९. **नागमंडल :** गिरीश कर्नाड (अनूदित) : अनुवादक-बी. आर. नारायण : प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ, १८, इन्स्टिट्युशनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली-११०००२

प्रथम सत्र

१. **नाटक का स्वरूप :** नाटक की परिभाषाएँ, विशेषताएँ, भारतीय एवं पाश्चात्त्य नाट्य दृष्टि, साहित्य की अन्य विधाओं से तुलना।

२. **नाट्य की संरचना :** कथावस्तु, चरित्रचित्रण, संवाद, भाषा शैली, उद्देश्य, अभिनय, प्रस्तुतिकरण, नाटक की सामूहिकता, दर्शक।

३. **एकांकी :** स्वरूप, परिभाषा, तत्त्व।

स्थूल अध्ययन के लिए नाटक :

१. **अंधेर नगरी :** भारतेंदु हरिश्चंद्र : अंधेर नगरी की संरचना का परिचय, नाटक की व्यंग्यात्मकता का विवेचन।

२. **ध्रुवस्वामिनी** : जयशंकर प्रसाद : ऐतिहासिक नाटक का स्वरूप, ध्रुवस्वामिनी का कथ्य शिल्प एवं मंचीयता की दृष्टि से विवेचन, ध्रुवस्वामिनी की प्रासंगिकता।

३. **कोणार्क :** जगदीशचंद्र माथुर : कोणार्क-नाट्य की संरचना का परिचय। कोणार्क नाटक में ऐतिहासिकता और प्रासंगिकता।

४. **कर्फ्यू :** लक्ष्मीनारायण लाल : कर्फ्यू-नाट्य की संरचना का परिचय। मनौवैज्ञानिक, समस्या-प्रधान, कथ्य और शिल्प की दृष्टि से विवेचन।

द्वितीय सत्र

हिंदी नाट्य और रंगमंच स्वरूप

१. **भारतेंदुपूर्व हिंदी नाटक :** प्रमुख नाटक और नाटककार, सामान्य प्रवृत्तियाँ, रंगमंच का परिचय, पारसी रंगमंच।

२. **भारतेंदुयुगीन हिंदी नाटक :** प्रमुख नाटक और नाटककार, सामान्य प्रवृत्तियाँ, रंगमंच का परिचय।

३. **प्रसादयुगीन हिंदी नाटक :** प्रमुख नाटक और नाटककार, सामान्य प्रवृत्तियाँ, रंगमंच का परिचय, पारसी रंगमंच का विकासात्मक परिचय।

४. **प्रसादोत्तर हिंदी नाटक :** प्रमुख नाटक एवं नाटककार, सामान्य प्रवृत्तियाँ तथा नए प्रयोग, रंगमंच का परिचय।

५. (अ) स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटक (सन् १९६० तक) प्रमुख नाटक एवं नाटककार, सामान्य प्रवृत्तियाँ तथा नए प्रयोग रंगमंच का परिचय।

(आ) स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटक (सन् १९९५ तक) प्रमुख नाटक एवं नाटककार, सामान्य प्रवृत्तियाँ तथा नए प्रयोग रंगमंच का परिचय।

६. **स्वातंत्र्योत्तर हिंदी में अनूदित नाटक** (सन् १९९० तक) : प्रमुख नाटक एवं नाटककार, अन्य भारतीय भाषाओं के रंगमंचीय नाटकों का संक्षेप में परिचय। (मराठी, कन्नड, बंगला, गुजराती, पंजाबी)

स्थूल अध्ययन के लिए नाटक

१. **आधे अधूरे :** मोहन राकेश, कथ्य, शिल्प एवं मंचीयता की दृष्टि से विवेचन।

२. **आठवाँ सर्ग :** सुरेंद्र वर्मा, कथ्य, शिल्प एवं मंचीयता की दृष्टि से विवेचन।

३. **कबिरा खड़ा बजार में :** भीष्म साहनी, कथ्य, शिल्प एवं मंचीयता की दृष्टि से विवेचन।

४. **अब गरीबी हटाओ :** सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, कथ्य, शिल्प एवं मंचीयता की दृष्टि से विवेचन।

५. **नागमंडल :** गिरीश कर्नाड (अनूदित नाटक), अनुवादक – बी. आर. नारायण कथ्य, शिल्प एवं मंचीयता की दृष्टि से विवेचन।

संदर्भ ग्रंथ :

१. हिंदी नाट्य : उद्‌भव और विकास–डॉ. दशरथ ओझा
२. हिंदी नाटक प्रगति और प्रभाव–डॉ. दशरथ ओझा
३. भारतीय नाट्यशास्त्र और रंगमंच–डॉ. रामसागर त्रिपाठी
४. हिंदी नाट्यसिद्‌धांत और विवेचन–डॉ. गिरीश रस्तोगी
५. नाट्य का रंगविधान–डॉ. विश्नाथ मिश्र
६. हिंदी नाट्य साहित्य और रंगमंच की मीमांसा–कुँवर चंद्रप्रकाश सिंह
७. नाट्य की साहित्यिक संरचना–गोविंद चातक
८. रंगदर्शन–नेमीचंद जैन
९. हिंदी रंगकर्म : दशा और दिशा
१०. नयी रंग चेतना और हिंदी नाटककार–डॉ. जयदेव तनेजा
११. मोहन राकेश : रंग शिल्प और प्रदर्शन–डॉ. जयदेव तनेजा
१२. रंगकर्म और मीडिया–डॉ. जयदेव तनेजा
१३. आधुनिक भारतीय रंग परिदृश्य–डॉ. जयदेव तनेजा
१४. आज के हिंदी रंग नाटक–डॉ. जयदेव तनेजा

१५. समकालीन हिंदी नाटक और रंगमंच–डॉ. जयदेव तनेजा
१६. रंगमंच : कला और दृष्टि–डॉ. गोविंद चातक
१७. नाट्य भाषा–डॉ. गोविंद चातक
१८. संपूर्ण रंगनाट्य–डॉ. गोविंद चातक
१९. प्रसाद के नाटकों में नारी पात्र–डॉ. मुकुलरानी सिंह
२०. प्रसाद के नाटक–सिद्धनाथ कुमार
२१. आधुनिक हिंदी नाटक : चरित्र सृष्टि के आयाम–डॉ. लक्ष्मी राय
२२. रंगमंच और स्वतंत्रता का आंदोलन–विजय पंडित
२३. आधुनिक हिंदी नाटकों में प्रयोगधर्मिता–डॉ. सत्यवती त्रिपाठी
२४. रंगमंच-नया परिदृश्य–रीतारानी पालीवाल
२५. नाट्यकला–रघुवंश
२६. समकालीन नाट्यविवेचन (विकास प्रकाशन, कानपुर)–डॉ. माधव सोनटक्के
२७. नाटककार जगदीशचंद्र माथुर (राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली)–गोविंद चातक
२८. नाटककार लक्ष्मीनारायण लाल (पंचशील प्रकाशन, जयपुर)–डॉ. सरजूप्रसाद मिश्र
२९. हिंदी नाटक (राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली)–बच्चन सिंह
३०. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी रंगमंच : समस्या और उपलब्धि (अतुल प्रकाशन, कानपुर)–डॉ. ओमप्रकाश शर्मा
३१. प्रसाद के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)–जगन्नाथ प्रसाद शर्मा
३२. पारसी थिएटर-उद्भव और विकास–सोमनाथ
३३. नाट्य सिद्धांत विवेचन–शांति मलिक
३४. सम सामयिक हिंदी नाटकों में खंडित व्यक्तित्व अंकन–डॉ. टी. आर. पाटील ।

प्र३

(**सूचना** : सभी प्रश्नों के लिए समान अंक होंगे)

प्रथम सत्र

(कुल अंक–६०)

प्रथम सत्र के पाठ्यक्रम पर आधारित कुल **सात** दीर्घोत्तरी तथा **एक** टिप्पणियों का प्रश्न होगा। इनमें से **चार** प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

द्‌वितीय सत्र

विभाग 'अ'

(कुल अंक–६०)

प्रथम सत्र के पाठ्यक्रम पर आधारित **तीन** दीर्घोत्तरी तथा **एक** टिप्पणियों (४ में से २) का प्रश्न होगा। इनमें से **दो** प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

विभाग 'ब'

द्‌वितीय सत्र के पाठ्यक्रम पर आधारित **चार** दीर्घोत्तरी तथा **एक** टिप्पणियों (४ में से २) का प्रश्न होगा। इनमें से **तीन** प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

प्र३

(ऊ) **अन्य-प्रयोजनमूलक हिंदी**

उद्‌देश्य :

१. हिंदीभाषा की प्रमुख प्रयुक्तियों और प्रयोजनमूलक शैलियों का परिचय देना।
२. भारतीय अंकों के अंतर्राष्ट्रीय रूप का परिचय देना।
३. हिंदी की मानक वर्तनी का परिचय देना।
४. पारिभाषिक शब्दावली के स्वरूप एवं निर्माण के सिद्‌धांतों का परिचय देना।
५. राजभाषाविषयक सरकारी नीति का क्रमिक परिचय देना। कार्यालयों में प्रयोग की आवश्यकता और वर्तमान स्थिति से परिचित कराना।
६. विविध प्रकार के पत्र लेखन की क्षमता विकसित करना।

अध्यापन पद्धति :

१. व्याख्यान तथा विश्लेषण
२. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा
३. दृक्-श्राव्य माध्यमों/साधनों का प्रयोग
४. राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के लिए विभिन्न कार्यालयों की अध्ययन यात्रा
५. केंद्रीय सरकार तथा उपक्रम कार्यालयों के राजभाषा अधिकारियों के लिए अतिथि व्याख्यान।

पाठ्यक्रम :

प्रथम सत्र

१. **हिंदी भाषा की प्रयुक्तियाँ :** साहित्य, प्रशासनिक, वैज्ञानिक, व्यावसायिक, जनसंपर्कीय, खेलकूद, विज्ञापन तथा बोलचाल संबंधी
२. **हिंदी की प्रयोजनमूलक शैलियाँ :** संवाद, वर्णनात्मक, विवरणात्मक, भावात्मक, विचारात्मक, पत्रलेखन
३. **अंक** : नागरी अंक भारतीय अंकों के अंतर्राष्ट्रीय रूप का मानक वर्तन। वर्तनी-समस्याएँ, मानक रूप देने के प्रयास, केंद्रीय हिंदी निदेशालय के वर्तनीसंबंधी नियम।
४. **पारिभाषिक शब्दावली :** अर्थ, आवश्यकता, शब्दनिर्माण की विभिन्न प्रवृत्तियाँ, शब्दनिर्माण की प्रक्रिया।
५. **कार्यालयीन पारिभाषिक शब्दावली, वाक्य एवं वाक्यांश-वाक्यों में प्रयोग ।**
६. **कम्प्यूटर और हिंदी ।**

द्वितीय सत्र

७. **राजभाषा हिंदी विषयक सरकारी नीति** : आरंभ से आजतक विकास के चरण। विविध सरकारी कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग की स्थिती।
८. **व्यापारिक पत्रलेखन** : स्वरूप, प्रकार।

(क) पूछताछ-माल, सुविधाएँ, मूल्यसूची, शर्तें
(ख) आदेश-माल के आदेश प्राप्त करने-देने, रद्द करने के आदि के संबंध में पत्राचार
(ग) संदर्भ या परिचय पत्र
(घ) शिकायती पत्र-माल न भेजने, कम भेजने, घटिया या खराब माल, खराब वेष्टन, विलंब, अधिक मूल्य आदि के संबंध में पत्राचार।
(च) तकादे या भुगतान संबंधी पत्राचार
(छ) साख पत्र
(ज) आढ़त या एजेंसी संबंधी पत्र

९. **आवेदन या प्रार्थना पत्र :**
(क) नौकरी के लिए
(ख) कार्यालयीन छुट्टी (छुट्टीयों के विविध प्रकार), स्थानांतरण, स्थायीकरण, पदनाम, कार्य परिवर्तन, सरकारी मकान संबंधी आदि।
(ग) वेतन तथा धन संबंधी-वेतन, वेतनवृद्धि, अतिरिक्त वेतन, भत्ते, समयोपरि भत्ते, विशेष वेतन, पदोन्नति, वरिष्ठता, भविष्य निधी, अग्रिम धन एवं विविध भुगतानों से संबंधित आवेदन पत्र।

१०. **सरकारी पत्राचार** : स्वरूप, प्रकार तथा प्रारूप।
पत्र, परिपत्र, ज्ञापन, कार्यालय ज्ञापन, कार्यालय आदेश, अर्ध्द सरकारी पत्र, अनौपचारिक पत्र, पृष्ठांकन, अधिसूचना, संस्ताव, प्रेस विज्ञप्ति, तार-टेलेक्स, मितव्यय पत्र, अनुस्मारक, सूचना।

११. **टिप्पणी लेखन** : उद्देश्य, सिद्धांत, स्वरूप, विशेषताएँ प्रकार-सूक्ष्म टिप्पणी, सामान्य टिप्पणी, संपूर्ण टिप्पणी, अनुभागीय टिप्पणी, नित्यक्रमिक टिप्पणी, अनौपचारिक टिप्पणी, आनुषंगिक टिप्पणी।

१२. **संक्षेपण** : उद्देश्य–

विविध प्रकार-स्वतंत्र संक्षेपण, प्रवहमान संक्षेपण, तालिका संक्षेपण, स्वयंपूर्ण संक्षेपण।

संदर्भ ग्रंथ :

१. राजभाषा हिंदी–डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया
२. प्रयोजनमूलक व्यावहारिक हिंदी–डॉ. ओमप्रकाश सिंहल
३. प्रयोजनमूलक भाषा और कार्यालयी हिंदी–डॉ. कृष्णकुमार गोस्वामी
४. राजभाषा हिंदी–डॉ. भोलानाथ तिवारी
५. कार्यालयीन हिंदी–डॉ. ठाकुरदास
६. कामकाजी हिंदी–डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया
७. सरकारी कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग–डॉ. गोपीनाथ श्रीवास्तव
८. कार्यालयी हिंदी–डॉ. केशरीलाल वर्मा
९. हिंदी भाषा-स्वरूप और विकास–डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया, मोतीलाल चतुर्वेदी
१०. हिंदी में सरकारी कामकाज करने की विधि–रामविनायक सिंह
११. हिंदी : उद्भव, विकास और रूप–डॉ. हरदेव बाहरी
१२. हिंदी आलेखन और टिप्पण–ओमप्रकाश शर्मा
१३. प्रशासनिक और व्यापारिक पत्रव्यवहार (खंड १-२)–डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर
१४. देवनागरी लिपी तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण–केंद्रीय हिंदी निदेशालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली
१५. हिंदी भाषा : संदर्भ और संरचना–प्रो. सूरजभान सिंह
१६. पारिभाषिक शब्दावली की विकास यात्रा–संपा. गार्गी गुप्त
१७. कम्प्यूटर और हिंदी–डॉ. हरिमोहन
१८. पारिभाषिक शब्दसंग्रह (अंग्रेजी-हिंदी)–केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली
१९. कार्यालय टिप्पणी, आलेख तथा संक्षिप्त लेखन–जी.एस. टंडन, एम. के. सरन

२०. प्रयोजनमूलक हिंदी–डॉ. रामप्रकाश, डॉ. दिनेश गुप्त
२१. संक्षेपण और विस्तारण–कैलाशचंद्र भाटिया, सुमनसिंह।

प्रश्नपत्र का स्वरूप एवं अंक विभाजन

(**सूचना** : सभी प्रश्नों के लिए समान अंक होंगे)

प्रथम सत्र

(कुल अंक–६०)

प्रथम सत्र के पाठ्यक्रम पर आधारित **सात** दीर्घोत्तरी तथा **एक** टिप्पणियों का प्रश्न होगा। इनमें से **चार** प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

द्वितीय सत्र

विभाग 'अ'

(कुल अंक–६०)

प्रथम सत्र के पाठ्यक्रम पर आधारित **तीन** दीर्घोत्तरी तथा **एक** टिप्पणियों (४ में से २) का प्रश्न होगा। इनमें से **दो** प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

विभाग 'ब'

द्वितीय सत्र के पाठ्यक्रम पर आधारित **चार** दीर्घोत्तरी तथा **एक** टिप्पणियों (४ में से २) का प्रश्न होगा। इनमें से **तीन** प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

प्रश्नपत्र ५ : सामान्यस्तर

आधुनिक काव्य

उद्देश :

१. आधुनिक हिंदी काव्य की प्रवृत्तियों का परिचय कराना।
२. आधुनिक काल के प्रबंध और मुक्तक काव्य के तात्त्विक स्वरूप की जानकारी देना। आधुनिक युग में इन काव्य प्रकारों के विकासक्रम का परिचय कराना।
३. आधुनिक काव्यप्रकारों के तात्त्विक स्वरूप एवं विकासक्रम के परिप्रेक्ष्य में रचनाओं के आस्वादन, अध्ययन और मूल्यांकन की दृष्टि देना।

अध्यापन पद्धति :

१. व्याख्यान तथा विश्लेषण
२. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा
३. दृक्-श्राव्य माध्यमों/साधनों का प्रयोग
४. परिचर्चा
५. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान।

प्रथम सत्र

पाठ्यग्रंथ

१. **कामायनी** : जयशंकर प्रसाद, प्रकाशक, : प्रसाद प्रकाशन, गोवर्धन सराय, वाराणसी, **(चिंता, श्रद्धा, इड़ा, आनंद सर्गों का अध्ययन)**
२. **परिक्रमा** : महादेवी वर्मा, प्रकाशक : साहित्य भवन प्रा. लि., ९३, जीरो रोड, इलाहाबाद-३

केवल निम्नलिखित कविताएँ :

१. वे मुस्काते फूल
२. फिर विकल हैं प्राण मेरे
३. मैं नीर भरी दुख की बदली
४. पुलक पुलक ठर सिहर सिहर तन
५. बीन भी हूँ मैं तुम्हारी, रागिनी भी हूँ
६. अली मैं कण-कण को जान चली
७. प्राणों के अंतिम पाहुन
८. तुम हो विधु के बिम्ब और मैं
९. मधुर-मधुर मेरे दीपक जल
१०. दीप मेरे जल अकम्पित
११. तेरी छाया में अमिट रंग
१२. धीरे-धीरे उत्तर क्षितिज से
१३. रूपसि तेरा धन-केश-पाश
१४. नभ आज मनाता तिमिर-पर्व
१५. कहाँ से आये बादल काले ।

द्वितीय सत्र

३. **अंधायुग** : डॉ. धर्मवीर भारती, प्रकाशक : किताब महल, इलाहाबाद।

४. **कवित-मंजरी** : संपा. डॉ. कमलेश गुप्ता, प्रकाशक : अरुणोदय प्रकाशन, ३५-ए, डी.डी.ए. फ्लैट्स, मानसरोवर पार्क, शाहदरा, दिल्ली-११००३२

(अज्ञेय, गिरिजाकुमार माथुर, रघुवीर सहास, धूमिल की कविताएँ)

५. **प्रतिनिधी कविताएँ** : गजानन माधव मुक्तिबोध, प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., १-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-११०००२

केवल निम्नलिखित कविताएँ :

१. मुझे पुकारती हुई पुकार
२. एक भूतपूर्व विद्रोही का आत्मकथन
३. चाँद का मुँह टेढ़ा है
४. ब्रह्मराक्षस
५. अंधेरे में

(सूचना : दोनों के प्रश्नपत्रों में निर्धारित कृतियों पर ससंदर्भ व्याख्या का प्रश्न अनिवार्य होगा।)

संदर्भ ग्रंथ :

१. कामायनी में काव्य, संस्कृति और दर्शन–डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना
२. कामायनी के अध्ययन की समस्याएँ–डॉ. नगेंद्र
३. कामायनी : कला और दर्शन–डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी
४. कामायनी पुनर्मूल्यांकन–डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी
५. कामायनी एक पुनर्विचार–गजानन माधव मुक्तिबोध
६. कामायनी की आलोचन प्रक्रिया–गिरिजा राय
७. महादेवी अभिनंदन ग्रंथ–प्रका. भारती परिषद, प्रयाग

८. महादेवी : चिंतन और कला–इंद्रनाथ मदान
९. महादेवी वर्मा : काव्य, कला और जीवनदर्शन–शचीरानी गुर्टू
१०. महादेवी : नया मूल्यांकन–डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त
११. कवयित्री महादेवी–डॉ. शोभनाथ यादव
१२. महादेवी वर्मा–तारकनाथ बाली
१३. महादेवी की रचना प्रक्रिया–विश्वम्भर मानव
१४. महादेवी की रहस्य साधना–विश्वम्भर मानव
१५. नई कविता : स्वरूप और समस्या–डॉ. जगदीश गुप्त
१६. नई कविता के प्रमुख हस्ताक्षर–डॉ. संतोषकुमार तिवारी
१७. नई कविता : सीमाएँ और संभवनाएँ–गिरिजाकुमार माथुर
१८. छायावादोत्तर हिंदी कविता : प्रमुख प्रवृत्तियाँ–डॉ. त्रिलोचन पांडेय
१९. नई कविता के नाट्यकाव्य–डॉ. हरिचरण शर्मा
२०. नई कविता की नाट्यभूमिका–डॉ. हुकूमचंद राजपाल
२१. गजानन माधव मुक्तिबोध : जीवन और काव्य–महेश नागर
२२. मुक्तिबोध की काव्य प्रक्रिया–अशोक चक्रधर
२३. मुक्तिबोध की काव्यसृष्टि–सु. ऋतुपर्ण
२४. अज्ञेय की कविता : एक मूल्याकंन–डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर
२५. अज्ञेय कवि–डॉ. ओमप्रकाश अवस्थी
२६. शमशेर की कविता–नरेंद्र वसिष्ठ
२७. शमशेर कविता लोक–डॉ. जगदीशकुमार
२८. शमशेर : बिंबों से झाँकता कवि–डॉ. वीरेंद्र सिंह
२९. कुँवर नारायण और उनका साहित्य–अनिल मेहरोत्रा
३०. धर्मवीर भारती और उनका अंधायुग–साधना भंडारी
३१. समसामायिक हिंदी नाटकों में खंडित व्यक्तित्व अंकन–डॉ. टी. आर. पाटील
३२. धर्मवीर भारती : व्यक्तित्व एवं कृतित्व–डॉ. पुष्पा वास्कर
३३. स्वातंत्रोत्तर हिंदी काव्य में महाभारत के पात्र (चंद्रलोक प्रकाशन, कानपुर)–डॉ. जे. आर. बोरसे।

प्रश्नपत्र का स्वरूप एवं अंक विभाजन

(**सूचना** : सभी प्रश्नों के लिए समान अंक होंगे)

प्रथम सत्र

(कुल अंक : ६०)

१. 'कामायनी' दीर्घोत्तरी प्रश्न

अथवा

'कामायनी' दीर्घोत्तरी प्रश्न

२. 'परिक्रमा' दीर्घोत्तरी प्रश्न

अथवा

'परिक्रमा' दीर्घोत्तरी प्रश्न।

३. टिप्पणीयाँ (४ में से २)
('कामायनी' -२, 'परिक्रमा'-२)

४. ससंदर्भ व्याख्या (अनिवार्य प्रश्न)
(क) कामायनी

अथवा

कामायनी

(ख) परिक्रमा

अथवा

परिक्रमा।

द्वितीय सत्र

विभाग 'अ'

(कुल अंक : ८०)

१. 'कामायनी' दीर्घोत्तरी प्रश्न

अथवा

'कामायनी' दीर्घोत्तरी प्रश्न।

२. 'परिक्रमा' दीर्घोत्तरी प्रश्न

अथवा

'परिक्रमा' दीर्घोत्तरी प्रश्न।

विभाग 'ब'

(किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर लिखने होंगे, जिनमें ससंदर्भ का प्रश्न **अनिवार्य** होगा।)

३. 'अंधायुग' दीर्घोत्तरी प्रश्न

अथवा

'अंधायुग' टिप्पणियाँ (३ में से २)।

४. 'कविता मंजरी' दीर्घोत्तरी प्रश्न

अथवा

'कविता मंजरी' टिप्पणियाँ (३ में से २)।

५. 'प्रतिनिधी कविताएँ' दीर्घोत्तरी प्रश्न

अथवा

'प्रतिनिधी कविताएँ' दीर्घोत्तरी प्रश्न।

६. ससंदर्भ व्याख्या (अनिवार्य प्रश्न)

(क) 'अंधायुग'

अथवा

'अंधायुग'

(ख) 'कविता मंजरी'

अथवा

'कविता मंजरी'

(ग) 'प्रतिनिधी कविताएँ'

अथवा

'प्रतिनिधी कविताएँ'।

प्रश्नपत्र ६ : विशेषस्तर
भाषाविज्ञान और हिंदी भाषा

उद्देश्य :

१. भाषाविज्ञान के अंगों एवं विभिन्न शाखाओं का परिचय देना।

२. भाषाविज्ञान के सैद्धांतिक पक्ष से अवगत करना।

३. भारतीय आर्य भाषाओं के ऐतिहासिक विकासक्रम की जानकारी देना।
४. हिंदी के शब्द भंडार एवं व्याकरणिक स्वरूप से परिचित कराना।
५. हिंदी के शब्द भेदों के विकासक्रम का विवरण देना।
६. साहित्य के अध्ययन में भाषाविज्ञान की उपयोगिता स्पष्ट करना।
७. लिपी के उद्‌भव और विकास के संदर्भ में देवनागरी लिपी की विशेष जानकारी देना।

अध्यापन पद्‌धति :

१. व्याख्यान तथा विश्लेषण
२. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा
३. दृक्-श्राव्य माध्यमों/साधनों का प्रयोग
४. भाषा प्रयोगशाला का प्रयोग
५. परिचर्चा तथा अतिथि विद्‌वानों के व्याख्यान।

पाठ्‌यक्रम :

१. **भाषा** : भाषा की परिभाषा, अभिलक्षण, भाषा-व्यवस्था और भाषा-व्यवहार।
२. **भाषा विज्ञान के अध्ययन की दिशाएँ** : ऐतिहासिक, वर्णनात्मक, तुलनात्मक।
३. **भाषाविज्ञान की शाखाएँ** : कोशविज्ञान, व्युत्पत्ति विज्ञान, लिपि विज्ञान, समाज विज्ञान, भाषाभूगोल का स्थूल परिचय।
४. **स्वनविज्ञान** : स्वनविज्ञान का स्वरूप, शाखाएँ : औच्चारिकी तथा श्रोतिकी।

   वागवयन तथा उनके कार्य। स्वन की परिभाषा, स्वन का वर्गीकरण।

   स्वर वर्गीकरण - जिह्‌वा के व्यवहृत भाग, जिह्‌वा की ऊँचाई तथा ओठों की आकृति के आधार पर, मान स्वर, संयुक्त स्वर।

   व्यंजन वर्गीकरण : स्थान, प्रयत्न, प्रणत्व और घोषत्व के आधार पर। श्रुति, व्यजंनगुच्छ। स्वनगुण-मात्रा, बलाघात, सुर, विवृत्ति, अक्षर-स्वरूप, भेद, स्वन परिवर्तन के कारण और दिशाएँ।

५. **स्वनिम विज्ञान** : स्वनिम की परिभाषा, स्वरूप और विशेषताएँ स्वन और स्वनिम में अंतर, स्वनिमिक विश्लेषण, स्वनिम सादृश्य, व्यतिरेकी तथा परिपूरक वितरण, अभिरचना अन्विति, लाघव, स्वनिम और संस्वन।

स्वनिम के भेद - खंडात्मक, स्वनिम लिप्यंकन।

६. **रूपविज्ञान** : रूपविज्ञान की परिभाषा, स्वरूप, रूपि रूपिम के भेद - संरचना की दृष्टि से : मुक्त, बद्ध, संपृक्त रूप। अर्थ की दृष्टि से : अर्थदर्शी (अर्थतत्त्व), संबंधदर्शी (संबंधतत्त्व)। खंडात्मकता की दृष्टि से : खंडात्मक और अधिखंडात्मक संबंधतत्त्व के भेद। रूप स्वनिम विज्ञान।

७. **वाक्यविज्ञान** : वाक्य की परिभाषा, स्वरूप, अभिहितान्वयवाद, अन्विताभिधानवाद।

वाक्य की आवश्यकताएँ - योग्यता, आकांक्षा, आसत्ति।

वाक्य की विश्लेषण - उद्देश्य, विधेय, निकटस्थ अवयव, विश्लेषण, मूल्य वाक्य, रूपांततित वाक्य, आंतरिक संरचना, बाह्य संरचना।

वाक्य के भेद - रचना, क्रिया और अर्थ के आधार पर।

८. **अर्थविज्ञान** : अर्थ की परिभाषा, स्वरूप, शब्द और अर्थ का संबंध। अर्थबोध के साधन, पर्यायता, विलोमता, अनेकार्थता। अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ, अर्थ परिवर्तन के कारण।

९. **भाषाविज्ञान और साहित्य** : साहित्य के अध्ययन में भाषाविज्ञान के अंगों की उपयोगिता।

द्वितीय सत्र

१०. **भारतीय आर्य भाषाएँ, प्राचीन भारतीय आर्य भाषाएँ और उनकी विशेषताएँ** - पालि, साहित्यिक प्राकृत, शौरसेनी, महाराष्ट्री, मागधी, अर्ध-मागधी, पैशाची अपभ्रंश।

११. **आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ और उनका वर्गीकरण** : हार्नली, ग्रियर्सन (अंतिम वर्गीकरण), चटर्जी और हरदेव बाहरी द्वारा किया गया वर्गीकरण, व्याकरणिक विशेषताएँ।

१२. **हिंदी की उपभाषाएँ और बोलियाँ - वर्गीकरण :** पूर्वी हिंदी व पश्चिमी हिंदी की तुलना, खड़बोली, ब्रज और अवधी की व्यकरणिक विशेषताएँ।

१३. **हिंदी का शब्द भंडार** : तत्सम, अर्ध्दतत्सम, तद्भव, देशी, विदेशी।

१४. **हिंदी का शब्द निर्माण** : उपसर्ग, प्रत्यय, समास।

१५. **हिंदी का व्याकरणिक स्वरूप और विकास** : रूप रचना : लिंग, वचन और कारक व्यवस्था के संदर्भ में हिंदी के संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के रूपों तथा अव्ययों का विकास।

१६. **लिपिविज्ञान** : लिपि की उत्पत्ति और विकास, खरोष्ठी और ब्राह्मी लिपि। देवनागरी लिपि : उद्भव और विकास, देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता, देवनागरी लिपि में सुधार।

संदर्भ ग्रंथ :

१. भाषाविज्ञान की भूमिका : सैद्धांतिक विवेचन (राजकमल प्रकाशन, दिल्ली)–देवेंद्रनाथ शर्मा

२. भाषाविज्ञान (किताब महल, इलाहाबाद)–भोलानाथ तिवारी

३. भाषा शास्त्र की रूपरेखा–उदय नारायण तिवारी

४. भाषाविज्ञान और भाषाशास्त्र (विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी)–डॉ. कपिलदेव द्विवेदी

५. आधुनिक भाषाविज्ञान (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)–डॉ. राजमणि शर्मा

६. भाषाविज्ञान के सिद्धांत (तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली)–डॉ. त्रिलोचन पाण्डेय

७. भाषाविज्ञान और हिंदी भाषा (तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली)–डॉ. के. डी. रूवाली

८. हिंदी भाषा (साहित्य भवन, इलाहाबाद)–कैलाशचंद्र भाटिया

९. भाषाविज्ञान (मयूर पेपर बैक्स, दिल्ली)–डॉ. राजमल बोरा
१०. भाषाविज्ञान एवं हिंदी भाषा (सरन प्रकाशन, मेरठ)–डॉ. विश्वदेव त्रिगुणायत
११. भाषाविज्ञान : सैद्धांतिक विवेचन (राजकमल प्रकाशन, दिल्ली)–डॉ. रवींद्र श्रीवास्तव
१२. सामान्य भाषाविज्ञान–डॉ. बाबूराम सक्सेना
१३. आधुनिक भाषाविज्ञान (नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली)–डॉ. कृपाशंकर सिंह
१४. भाषाविज्ञान के सिद्धांत और हिंदी भाषा–डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना
१५. भाषाविज्ञान की भूमिका–आचार्य देवेंद्रनाथ शर्मा
१६. आधुनिक भाषाविज्ञान सिद्धांत–डॉ. राम किशोर शर्मा
१७. भाषा एवं भाषाविज्ञान (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)–डॉ. महावीर सरन जैन
१८. भारतीय लिपियों की कहानी–गुणाकर मुले
१९. नागरी लिपि : रूप और सुधार–मोहन ब्रिज
२०. देवनागरी लिपि : स्वरूप, विकास और समस्याएँ (हिंदी साहित्य भंडार, लखनऊ)–न. चिं. जोगलेकर
२१. नागरी लिपि का उद्भव और विकास–डॉ. ओमप्रकाश भाटिया
२२. देवनागरी लिपि (राष्ट्रीय हिंदी परिषद, नेवासा)–संपादक डॉ. शहाबुद्दीन शेख
२३. हिंदी भाषा, राजभाषा और नागरी लिपि (हिंदी बुक सेंटर, दिल्ली)–डॉ. परमानंद पांचाल
२४. भाषा और भाषाविज्ञान (विकास प्रकाशन, जयपुर)–डॉ. तेजपाल चौधरी

प्र१

(**सूचना** : सभी प्रश्नों के लिए समान अंक होंगे)

प्रथम सत्र

(कुल अंक : ६०)

प्रथम सत्र के पाठ्यक्रम पर आधारित **सात** दीर्घोत्तरी प्रश्न तथा **एक** टिप्पणियों (४ में से २) का प्रश्न होगा। इनमें से **चार** प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

द्वितीय सत्र

(कुल अंक : ८०)

विभाग 'अ'

प्रथम सत्र के पाठ्यक्रम पर आधारित **तीन** दीर्घोत्तरी प्रश्न तथा **एक** टिप्पणियों (४ में से २) का प्रश्न पूछा जाएगा। इनमें से **चार** प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

विभाग 'ब'

द्वितीय सत्र के पाठ्यक्रम पर आधारित **चार** दीर्घोत्तरी प्रश्न तथा **एक** टिप्पणियों (४ में से २) का प्रश्न पूछा जाएगा। इनमें से **चार** प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

प्रश्न पत्र ७ : विशेष स्तर

हिंदी साहित्य का इतिहास

(आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल, आधुनिक काल)

उद्देश्य :

१. छात्रों को युगीन परिस्थितियों और साहित्यिक प्रवृत्तियों के आधार पर हिंदी के इतिहास के काल विभाजन तथा नामकरण का परिचय देना।

२. आदिकालीन, भक्तिकालीन और रीतिकालीन प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्तियों, प्रतिनिधि कवियों और उनकी रचनाओं से परिचित कराना।

३. जैन, सिद्ध, नाथ और अपभ्रंश साहित्य के प्रभाव से अवगत कराना।
४. आधुनिक युग की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, साहित्यिक तथा आर्थिक परिस्थितियों के बदलाव के परिप्रेक्ष्य में हिंदी साहित्य में आए हुए बदलाव से अवगत कराना।
५. हिंदी गद्य के आविर्भाव के प्रधान कारणों, परिस्थितियों का परिचय देना।
६. विषयवस्तु, भाषाशैली, शिल्प, विचारधारा, प्रभाव ग्रहण आदि के परिप्रेक्ष्य में प्रवृत्तियों को समझाते हुए हिंदी की प्रमुख गद्य विधाओं के विकास क्रम से परिचित कराना तथा प्रधान गद्यकारों का परिचय देना।
७. आधुनिक हिंदी कविता के विकास के प्रमुख चरणों की प्रवृत्तियों, उपलब्धियों तथा सीमाओं से अवगत कराना।

अध्यापन पद्धति :

१. व्याख्यान तथा विश्लेषण
२. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा
३. दृक्-श्राव्य माध्यमों/साधनों का प्रयोग
४. परिचर्चा
५. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान।

पाठ्यक्रम :

प्रथम सत्र

(आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल)

हिंदी साहित्य का इतिहास :

१. हिंदी साहित्य के इतिहास का काल-विभाजन काल विभाजन के आधार–भाषा, साहित्य, प्रथम साहित्यकार, भाषा क्षेत्र।

आदिकाल :

१. आदिकाल का प्रारंभ - विविध आचार्यों की मान्यताएँ और तर्क।

२. आदिकाल के नामकरण के विविध आधार और विविध नाम - चारणकाल, सिद्ध सामंतकाल, वीरगाथा काल आदि।
३. आदिकालीन परिस्थितियाँ - सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक साहित्यिक और उनका तत्कालीन साहित्य पर प्रभाव।
४. रासो काव्य की परंपरा - 'रासो' शब्द, विभिन्न अर्थ, रासो के प्रकार - जैन रासो, धार्मिक रासो, वीर रासो तथा रासो काव्य की प्रवृत्तियाँ।
५. गोरखनाथ, चंदबरदाई, अमीर खुसरो, विद्यापति आदि का साहित्यिक परिचय।

भक्तिकाल :

१. भक्तिकालीन साहित्य की पृष्ठभूमि - सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक।
२. निर्गुण भक्ति साहित्य और उसकी शाखाएँ : ज्ञानाश्रयी, प्रेमाश्रयी। दोनों की प्रमुख प्रवृत्तियाँ।
३. सगुण भक्ति साहित्य और उसकी शाखाएँ : रामभक्ति, कृष्णभक्ति। दोनों की प्रमुख प्रवृत्तियाँ।
४. प्रवृत्तियाँ एवं शैलियों के संदर्भ में कृष्णभक्ति और रामभक्ति साहित्य की तुलना।
५. भक्तिकालीन-साहित्य की सामाजिक उपादेयता - सूरदास, तुलसीदास, कबीर और जायसी के संदर्भ में।
६. भक्तिकालीन नीति - साहित्य का सामान्य परिचय।
७. भक्तियुगीन प्रतिनिधी कवियों का सामान्य परिचय : सूरदास, तुलसीदास, कबीर, जायसी, मीरा, नंददास, रसखान, रहीम।

रीतिकाल :

१. रीतिकाल की सामाजिक, राजनितिक, धार्मिक, साहित्यिक परिस्थितियाँ।
२. रीतिकालीन साहित्य पर संस्कृत साहित्य तथा भक्तिकालीन हिंदी साहित्य का प्रभाव।

३. लक्षण और लक्ष्य ग्रंथों का निर्माण तथा उस पर संस्कृत साहित्यशास्त्र का प्रभाव।
४. रीतिकाल के विविध नाम और उनके आधार।
५. रीतिकालीन साहित्य - रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध तथा रीतिमुक्त - की विषय वस्तु और शैलीगत प्रवृत्तियाँ।
६. रीतिकालीन साहित्य में शृंगार वर्णन।
७. रीतिकाल का शृंगारेतर साहित्य - भक्ति, नीति, वीर।
८. रीतिकालीन प्रमुख कवियों का परिचय :
केशवदास, देव, चिंतामणी, सेनापति, मतिराम, पद्माकर, घनानंद, बिहारी, भूषण।

द्वितीय सत्र
(आधुनिक काल)

(क) हिंदी गद्य का निर्माण

१. हिंदी गद्य के आविर्भाव के लिए उद्भुत परिस्थितियाँ।
२. भारतेंदुपूर्व काल के हिंदी गद्य का सामान्य परिचय : विशेषताएँ, प्रमुख गद्यकार, फोर्ट विलियम कॉलेज, ईसाई मिशनरी, आर्य समाज, ब्रह्म समाज आदि का योगदान और हिंदी गद्य।
३. भारतेंदुयुगीन हिंदी गद्य - साहित्य का स्वरूप और विशेषताएँ।
४. द्विवेदीयुगीन हिंदी गद्य - साहित्य का स्वरूप और सामान्य विशेषताएँ - साहित्यविषयक मान्यता, राष्ट्रीय भावना, सुधारवादी दृष्टि, भाषा सुधार।

(ख) हिंदी गद्य-विधाओं का विकास :

१. हिंदी उपन्यास साहित्य का विकास :

प्रेमचंदपूर्व युग, प्रेमचंद युग, प्रेमचंदोत्तर युग, स्वातंत्र्योत्तर युग (संबंधित युग के उपन्यास साहित्य की कथ्यगत एवं शिल्पगत प्रवृत्तियों का सामान्य परिचय)

प्रमुख उपन्यासकारों का विशेष परिचय :

प्रेमचंद, जैनेंद्रकुमार, हजारीप्रसाद द्विवेदी, अज्ञेय, यशपाल,

वृदांवनलाल शर्मा, फणीश्वरनाथ रेणु, रामदशरथ मिश्र, शिवप्रसाद सिंह, कृष्णा सोबती।

२. **हिंदी कहानी साहित्य का विकास :**

प्रेमचंदपूर्व युग, प्रेमचंद युग, प्रेमचंदोत्तर युग, स्वातंत्र्योत्तर युग, नई कहानी, साठोत्तरी, कहानी-अकहानी, सचेतन कहानी, समांतर कहानी (संबंधित युग अथवा धारा के कहानी साहित्य की कथ्यगत एवं शिल्पगत प्रवृत्तियों का सामान्य परिचय)

प्रमुख कहानीकारों का विशेष परिचय :

प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, जैनेंद्र कुमार, कमलेश्वर, मन्नू भंडारी, उषा प्रियंवदा, ज्ञानरंजन, उदय प्रकाश।

३. **हिंदी नाटक का उद्‌भव और विकास :**

भारतेंदुपूर्वयुग, भारतेंदु युग, प्रसाद युग, प्रसादोत्तर युग, स्वातंत्र्योत्तर युग, साठोत्तर युग (संबंधित युग के नाट्य साहित्य की कथ्यगत एवं शिल्पगत प्रवृत्तियों का सामान्य परिचय)

प्रमुख नाटककारों का विशेष परिचय :

भारतेंदु हरिश्चंद्र, जयशंकर प्रसाद, धर्मवीर भारती, लक्ष्मीनारायण मिश्र, मोहन राकेश, लक्ष्मीनारायण लाल, शंकर शेष, सुरेंद्र वर्मा।

४. **हिंदी निबंध का इतिहास :**

भारतेंदु युग, द्‌विवेदी युग, शुक्ल युग, शुक्लोत्तर युग, स्वातंत्र्योत्तर युग, साठोत्तर युग (संबंधित युग के निबंध साहित्य की सामान्य विशेषताएँ)

प्रमुख निबंधकारों का विशेष परिचय :

पं. प्रतापनारायण मिश्र, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, आचार्य हजारीप्रसाद द्‌विवेदी, विद्‌यानिवास मिश्र, कुबेरनाथ राय, हरिशंकर परसाई।

५. **हिंदी आलोचन का उद्‌भव और विकास :**

भारतेंदु युग, द्‌विवेदी युग, शुक्ल युग, शुक्लोत्तर युग, स्वातंत्र्योत्तर युग, साठोत्तर युग (संबंधित युग के आलोचना साहित्य की सामान्य विशेषताओं का परिचय)

प्रमुख आलोचकों का विशेष परिचय :

आचार्य महावीरप्रससाद द्विवेदी, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, आचार्य नंददुलारे वाजपेयी, डॉ. रामविलास शर्मा, डॉ. नामवर सिंह, डॉ. नगेंद्र।

(ग) आधुनिक हिंदी काव्य का विकास :

१. **भारतेंदुयुगीन कविता** : सामान्य प्रवृत्तियाँ। भारतेंदुयुगीन प्रतिनिधी कवियों का सामान्य परिचय : भारतेंदु हरिश्चंद्र, पं. बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमधन'।

२. **द्विवेदीयुगीन हिंदी कविता** : सामान्य प्रवृत्तियाँ। द्विवेदीयुगीन प्रतिनिधी कवियों का सामान्य परिचय : मैथिलीशरण गुप्त, पं. श्रीधर पाठक।

३. **राष्ट्रीय सांस्कृतिक धारा की कविता** : सामान्य प्रवृत्तियाँ। प्रधान कवि : माखनलाल चतुर्वेदी, दिनकर।

४. **छायावादी कविता** : उद्भव के कारण, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, सीमाएँ। प्रमुख छायावादी कवि - प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी वर्मा।

५. **प्रगतिवादी कविता** : उद्भव के कारण, सामान्य प्रवृत्तियाँ, सीमाएँ। कवि - नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल।

६. **प्रयोगवादी कविता** : उद्भव के कारण, प्रमुख प्रवृत्तियाँ,।

७. **नई कविता** : प्रमुख प्रवृत्तियाँ। प्रमुख कवि - अज्ञेय, मुक्तिबोध, गिरिजाकुमार माथुर, नरेश मेहता, रघुवीर सहाय।

८. **साठोत्तरी कविता** : सामान्य प्रवृत्तियाँ। प्रमुख कवि-धूमिल, दुष्यंत कुमार, लीलाधर जुगड़ी, केदारनाथ सिंह, चंद्रकांत देवताले, मंगलेश डबराल।

संदर्भ ग्रंथ :

१. हिंदी साहित्य का इतिहास–आचार्य रामचंद्र शुक्ल
२. हिंदी साहित्य का इतिहास–संपा. डॉ. नगेंद्र
३. हिंदी साहित्य का इतिहास–डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी

४. हिंदी साहित्य का इतिहास–डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय
५. हिंदी साहित्य का इतिहास (प्रभात प्रकाशन, दिल्ली)–श्यामचंद्र कपूर
६. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास–डॉ. बच्चन सिंह
७. हिंदी साहित्य और उसकी प्रवृत्तियाँ–डॉ. गोविंदराम शर्मा
८. हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियाँ–डॉ. जयकिशन प्रसाद खंडेलवाल
९. हिंदी साहित्य का सुबोध इतिहास–बाबू गुलाबराय
१०. आधुनिक साहित्य का इतिहास–डॉ. बच्चन सिंह
११. हिंदी साहित्य की भूमिका–डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी
१२. हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास–डॉ. रामकुमार वर्मा
१३. हिंदी गद्य का उद्‌भव और विकास–डॉ. उमेश शास्त्री
१४. हिंदी साहित्य : एक परिचय–डॉ. त्रिभुवन सिंह
१५. हिंदी साहित्य और संवेदना का इतिहास–डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी
१६. हिंदी रीति साहित्य –डॉ. भगीरथ मिश्र
१७. रीतियुगीन काव्य–डॉ. कृष्णचंद्र वर्मा
१८. रीतिकाव्य की भूमिका–डॉ. नगेंद्र
१९. हिंदी रीतिकालीन काव्य पर संस्कृत काव्य का प्रभाव–डॉ. दयानंद शर्मा
२०. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य का इतिहास–डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय
२१. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य–रामरतन भटनागर
२२. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटक–डॉ. रीता कुमार
२३. नये प्रतिनिधि कवि–डॉ. हरिचरण शर्मा
२४. हिंदी का आधुनिक प्रतिनिधि कवि–डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना
२५. हिंदी साहित्य की नवीन विधाएँ–डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया
२६. हिंदी के प्रतिनिधि निबंधकार–डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना
२७. हिंदी का प्रतिनिधि कहानीकार–डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना
२८. हिंदी उपन्यास : उद्‌भव और विकास–डॉ. सुरेश सिन्हा
२९. उपन्यास : स्थिति और गति–डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर

३०. हिंदी उपन्यास : एक अंतर्यात्रा–डॉ. रामदरश मिश्र
३१. आधुनिक हिंदी साहित्य का आदिकाल–श्री. नारायण चतुर्वेदी दद्दा
३२. हिंदी साहित्य : युग और प्रवृत्तियाँ–डॉ. शिवकुमार शर्मा
३३. हिंदी साहित्य का प्रवृत्तिपरक इतिहास–डॉ. सभापति मिश्र
३४. हिंदी साहित्य का इतिहास–डॉ. माधव सोनटक्के
३५. हिंदी साहित्य का अद्यतन इतिहास–डॉ. मोहन अवस्थी
३६. हिंदी साहित्य का सही इतिहास–डॉ. चंद्रभानु सोनवणे।

प्रश्न

(**सूचना** : सभी प्रश्नों के लिए समान अंक होंगे)

प्रथम सत्र

(कुल अंक–६०)

१. 'आदिकाल' दीर्घोत्तरी प्रश्न १५

अथवा

'आदिकाल' टिप्पणियाँ (३ में से २)

२. 'भक्तिकाल' दीर्घोत्तरी प्रश्न १५

अथवा

'भक्तिकाल' टिप्पणियाँ (३ में से २)

३. 'रीतिकाल' दीर्घोत्तरी प्रश्न १५

अथवा

'रीतिकाल' टिप्पणियाँ (३ में से २)

४. (अ) लघुत्तरी प्रश्न (६ में से ५) १०
(आ) एक वाक्यीय उत्तरवाले प्रश्न (५) ५

द्वितीय सत्र

(कुल अंक–८०)

विभाग 'अ'

१. प्रथम सत्र के पाठ्यक्रम पर दीर्घोत्तरी प्रश्न १६

अथवा

प्रथम सत्र के पाठ्यक्रम पर दीर्घोत्तरी प्रश्न

२. प्रथम सत्र के पाठ्यक्रम पर दीर्घोत्तरी प्रश्न १६

अथवा

प्रथम सत्र के पाठ्यक्रम पर टिप्पणियाँ (४ में से २)

विभाग 'ब'

३. द्वितीय सत्र के पाठ्यक्रम पर दीर्घोत्तरी प्रश्न १६

अथवा

द्वितीय सत्र के पाठ्यक्रम पर टिप्पणियाँ (४ में से २)

४. द्वितीय सत्र के पाठ्यक्रम पर दीर्घोत्तरी प्रश्न १६

अथवा

द्वितीय सत्र के पाठ्यक्रम पर टिप्पणियाँ (४ में से २)

५. (अ) द्वितीय सत्र के पाठ्यक्रम पर लघूत्तरी प्रश्न (६ में से ५) १०

(आ) द्वितीय सत्र के पाठ्यक्रम पर एक वाक्यीय उत्तरवाले प्रश्न (६) ६

प्र१

(क) आधुनिक हिंदी आलोचना

उद्देश्य :

१. छात्रों को आलोचना का स्वरूप से परिचित कराना।
२. हिंदी आलोचना के विकासक्रम का परिचय देना।
३. हिंदी के प्रमुख आलोचकों की आलोचना पद्धतियों से अवगत कराना।
४. हिंदी आलोचकों के प्रदेय से परिचित कराना।
५. निर्धारित आलोचकों की आलोचना पद्धतियों के परिचय द्वारा छात्रों को आलोचना-दृष्टि देना।

अध्यापन पद्धति :

१. व्याख्यान तथा विश्लेषण
२. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा
३. दृक्-श्राव्य माध्यमों/साधनों का प्रयोग
४. परिचर्चा
५. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान ।

पाठ्यक्रम में निर्धारित आलोचक :

१. आचार्य रामचंद्र शुक्ल।
२. डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी
३. आचार्य नंददुलारे वाजपेयी
४. डॉ. नगेंद्र
५. डॉ. रामविलास शर्मा
६. डॉ. नामवर सिंह

प्रथम सत्र

अध्ययनार्थ विषय :

१. आलोचना का स्वरूप एवं उद्देश्य
२. आलोचना की प्रक्रिया
३. आलोचना के गुण
४. आलोचना और अनुसंधान
५. आलोचना के प्रमुख प्रकार
६. हिंदी आलोचना का विकास क्रम
७. हिंदी आलोचना और सर्जनशील साहित्य

द्वितीय सत्र

८. आचार्य रामचंद्र शुक्ल और डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी की आलोचना पद्धतियों का अध्ययन
९. आचार्य रामचंद्र शुक्ल और डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी की आलोचना पद्धतियों में साम्य और वैषम्य

१०. आधुनिक हिंदी आलोचना में आचार्य रामचंद्र शुक्ल तथा हजारीप्रसाद द्विवेदी का योगदान
११. आचार्य नंददुलारे वाजपेयी की आलोचना पद्धति : स्वरूप और विशेषता
हिंदी आलोचना में आचार्य वाजपेयी का योगदान
१२. डॉ. नगेंद्र की आलोचना पद्धति : स्वरूप और विशेषता
हिंदी आलोचन में डॉ. नगेंद्र का योगदान
१३. डॉ. रामविलास शर्मा की आलोचना पद्धति : स्वरूप और विशेषता
हिंदी आलोचना में डॉ. रामविलास शर्मा का योगदान
१४. डॉ. नामवर सिंह की आलोचना पद्धति : स्वरूप और विशेषता
हिंदी आलोचना में डॉ. नामवर सिंह का योगदान
१५. उपर्युक्त आचार्यों के प्रमुख आलोचना ग्रंथों का सामान्य ज्ञान।

संदर्भ ग्रंथ :

१. हिंदी आलोचना-स्वरूप और प्रक्रिया–संपा. डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित
२. आचार्य शुक्ल के समीक्षा सिद्धांत–डॉ. रामलाल सिंह
३. आचार्य रामचंद्र शुक्ल और हिंदी आलोचना–डॉ. रामविलास शर्मा
४. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी : व्यक्तित्व और साहित्य–डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त
५. आचार्य नदंदुलारे वाजपेयी : व्यक्तित्व और साहित्य–डॉ. रामाधार शर्मा
६. हिंदी आलोचना का इतिहास–डॉ. रामदरश मिश्र
७. हिंदी आलोचना : उद्भव और विकास–भगवतस्वरूप मिश्र
८. हिंदी के विशिष्ट आलोचक–नंदकुमार राय
९. हिंदी आलोचना के आधार स्तंभ–डॉ. रामेश्वर खंडेलवाल
१०. हिंदी की सैद्धांतिक समीक्षा–डॉ. रामाधार शर्मा
११. हिंदी की सैद्धांतिक आलोचना–डॉ. रूपकिशोर मिश्र
१२. हिंदी समीक्षा : स्वरूप और संदर्भ–डॉ. रामदरश मिश्र

१३. हिंदी आलोचना की परंपरा और आचार्य रामचंद्र शुक्ल–डॉ. शिवकुमार मिश्र
१४. डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी–संपा. विश्वनाथप्रसाद तिवारी
१५. डॉ. नगेंद्र के आलोचना सिद्धांत–नारायण प्रसाद चौबे
१६. डॉ. नगेंद्र के अभिनंदन ग्रंथ–संपा. पंत और अन्य
१७. डॉ. रामविलास शर्मा–डॉ. विश्वनाथप्रसाद तिवारी
१८. आलोचक रामविलास शर्मा–डॉ. नत्थन सिंह
१९. दूसरी परंपरा की खोज–डॉ. नामवर सिंह
२०. भारतीय काव्यशास्त्र के नये क्षितिज–डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी

प्रश्न

(**सूचना** : सभी प्रश्नों के लिए समान अंक होंगे)

प्रथम सत्र

(कुल अंक–६०)

प्रथम सत्र के पाठ्यक्रम पर आधारित **सात** दीर्घोत्तरी प्रश्न तथा **एक** टिप्पणियों (३ में से २) का प्रश्न होगा। इनमें से **चार** प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

द्वितीय सत्र

विभाग 'अ'

(कुल अंक–८०)

प्रथम सत्र के पाठ्यक्रम पर आधारित **तीन** दीर्घोत्तरी तथा **एक** टिप्पणियों (३ में से २) का प्रश्न होगा। इनमें से **दो** प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

विभाग 'ब'

द्वितीय सत्र के पाठ्यक्रम पर आधारित **चार** दीर्घोत्तरी प्रश्न तथा **एक** टीप्पणियों (३ में से २) का प्रश्न होगा। इनमें से **तीन** प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

प्र१

(ख) शैलीविज्ञान एवं सौंदर्यशास्त्र

उद्देश्य :

१. शैलीविज्ञान के स्वरूप, क्षेत्र, विकास का परिचय देना।
२. शैली के स्वरूप, तत्त्व, उपकरणों का परिचय देना।
३. शैलीविज्ञान का अन्य ज्ञानशाखाओं से संबंध विशद करना।
४. भारतीय और पाश्चात्त्य काव्यशास्त्र में शैलीविज्ञान के तत्त्वों पर प्रकाश डालना।
५. सौंदर्यशास्त्र का स्वरूप, व्याप्ति तथा अन्य ज्ञानशाखाओं से संबंध की जानकारी देना।
६. सौंदर्य की परिभाषा, उपादान तथा सौंदर्यानुभूति के स्वरूप का परिचय देना।
७. भारतीय और पाश्चात्त्य सौंदर्यविषयक चिंतनधाराओं का परिचय देना।

अध्यापन पद्धति :

१. व्याख्यान तथा विश्लेषण
२. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा
३. दृक्-श्राव्य माध्यमों/साधनों का प्रयोग
४. परिचर्चा
५. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान।

प्रथम सत्र

१. **शैलीविज्ञान :** स्वरूप, प्रयोजन, अध्ययन क्षेत्र, विकास।
२. **शैली :** परिभाषा, स्वरूप, शैली बनाम रीति।
३. शैली के उपकरण, शैली के तत्त्व।
४. **शैलीविज्ञान तथा अन्य ज्ञानशाखाएँ :** भाषाविज्ञान, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, सौंदर्यशास्त्र।

५. भारतीय काव्यशास्त्र तथा पाश्चात्त्य काव्यशास्त्र के सिद्धांतों में शैलीविज्ञान के तत्व।

६. साहित्य समीक्षा प्रणाली के रूप में शैलीविज्ञान का स्थान।

द्वितीय सत्र

७. **सौंदर्यशास्त्र :** स्वरूप, व्याप्ति। सौंदर्यशास्त्र का अन्य ज्ञानशाखाओं से संबंध-दर्शनशास्त्र, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, साहित्यशास्त्र, शैलीविज्ञान, कलाविज्ञान।

८. **सौंदर्य :** परिभाषा, स्वरूप, सौंदर्य के पर्यायी शब्द, उनका औचित्य : सौंदर्य और कला का अंतःसंबंध, सुंदर और उदात्त, सत्यम्-सुंदरम् विषयक संकल्पना, सौंदर्य की कलावादी दृष्टि, सौंदर्य को उपादान।

९. सौंदर्यानुभूति, सौंदर्यबोध, रसानुभूति का परस्पर संबंध एवं अंतर, विशिष्ट पुनःप्रत्यय और सौंदर्यबोध, अनुभूति का प्रत्यक्षीकरण और सौंदर्यबोध, साहित्य का सौंदर्यबोध, सौंदर्यानुभूति।

१०. भारतीय काव्यशास्त्र में सौंदर्यशास्त्रीय चिंतन।

११. **पाश्चात्त्य सौंदर्यशास्त्र का विकास :** नव्य प्लेटोवाद, आंग्ल अनुभववाद, जर्मन प्रत्ययवाद, फ्रांसीसी कलावाद, अस्तित्ववादी सौंदर्यशास्त्र, मार्क्सवादी सौंदर्यशास्त्र।

१२. **प्रमुख सौंदर्यशास्त्रियों के सिद्धांत एवं दृष्टिकोण :**

(अ) कुमार विमल (आ) रमेश कुंतल मेघ।

(इ) क्रोचे (ई) काण्ट

(उ) मार्क्स (ऊ) शोपेनहॉवर

(ए) सुसान लैंगर

१३. साहित्य समीक्षा प्रणाली के रूप में सौंदर्यशास्त्र की उपयोगिता एवं महत्त्व।

संदर्भ ग्रंथ :

१. शैलीविज्ञान—डॉ. नगेंद्र

२. शैलीविज्ञान—डॉ. सुरेश कुमार

३. रीतिविज्ञान—डॉ. विद्यानिवास मिश्र

४. शैलीविज्ञान : प्रतिमान और विश्लेषण—डॉ. शशि भूषण 'शीतांशु'

५. शैलीविज्ञान और आलोचना की नई भूमिका—डॉ. रवींद्रनाथ श्रीवास्तव

६. संरचनात्मक शैलीविज्ञान—डॉ. रवींद्रनाथ श्रीवास्तव

७. भारतीय शैलीविज्ञान—डॉ. सत्यदेव चौधरी

८. पाश्चात्त्य और भारतीय शैलीविज्ञान–डॉ. राघवप्रकाश

९. शैलीविज्ञान और प्रतीकविज्ञान—संपादक डॉ. उमाशंकर उपाध्याय

१०. सौंदर्यशास्त्र के तत्त्व—डॉ. कुमार विमल

११. रससिद्धांत और सौंदर्यशास्त्र—डॉ. निर्मला जैन

१२. भारतीय सौंदर्यशास्त्र का तात्त्विक विवेचन एवं ललित कलाएँ—डॉ. रामलखन शुक्ल

१३. अथातो सौंदर्य जिज्ञासा—डॉ. रमेश कुंतल मेघ

१४. सौंदर्यतत्त्व निरूपण—एस. टी. नरसिंहचारी

१५. भारतीय सौंदर्यशास्त्र की भूमिका—डॉ. नगेंद्र

१६. सौंदर्यशास्त्र की पाश्चात्त्य परंपरा—नीलकांत

१७. सौंदर्यशास्त्र (अनुवाद—आनंदप्रकाश दीक्षित)—डॉ. सुरेंद्रनाथ दासगुप्त

१८. भारतीय सौंदर्यशास्त्र की भूमिका—डॉ. फतेहसिंह

१९. सौंदर्यशास्त्र—लक्ष्मणदास गौतम

२०. मार्क्सवादी सौंदर्यशास्त्र—संपा. कमला प्रसाद, मैनेजर पांडेय

प्रश्नपत्र का स्वरूप एवं अंक विभाजन

(**सूचना :** सभी प्रश्नों के लिए समान अंक होंगे)

प्रथम सत्र

(कुल अंक - ६०)

प्रथम सत्र के पाठ्यक्रम पर आधारित **सात** दीर्घोत्तरी प्रश्न तथा **एक** टिप्पणियाँ (३ में से २) का प्रश्न होगा। इनमें से **चार** प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

द्वितीय सत्र

विभाग 'अ'

(कुल अंक - ८०)

प्रथम सत्र के पाठ्यक्रम पर आधारित **तीन** दीर्घोत्तरी तथा **एक** टिप्पणियों (३ में से २) का प्रश्न होगा। इनमें से **दो** प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

विभाग 'ब'

द्वितीय सत्र के पाठ्यक्रम पर आधारित **चार** दीर्घोत्तरी प्रश्न तथा **एक** टिप्पणियों (३ में से २) का प्रश्न होगा। इनमें से **तीन** प्रश्नों के उत्तर अपेक्षत हैं।

प्रश्नपत्र ८ : विशेषस्तर—वैकल्पिक

(ग) अनुवादविज्ञान

उद्देश्य :

१. अनुवाद परिभाषा, स्वरूप, महत्त्व, व्याप्ति की जनाकारी देना।

२. अनुवाद के साथ भाषाविज्ञान और शैलीविज्ञान के संबंध का परिचय देना।

३. अनुवाद के विभिन्न रूपों और उनकी प्रक्रियाओं से परिचित कराना।

४. अनुवाद के सामाजिक और सांस्कृतिक पक्ष से अवगत कराना।

५. अनुवाद करते समय आनेवाली विभिन्न समस्याओं से परिचित कराना और उनके समाधान की क्षमता विकसित कराना।

६. अनुवाद करने की क्षमता विकसित करना।

७. अनुवाद समीक्षा की आवश्यकता एवं प्रक्रिया से अवगत कराना।

अध्यापन पद्धति :

१. व्याख्यान तथा विश्लेषण

२. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा

३. दृक्-श्राव्य माध्यमों / साधनों का प्रयोग

४. विविध भाषाओं की कृतियों के अनुवाद का अभ्यास / प्रात्यक्षिक

५. राजभाषा अधिकारियों के व्याख्यान।

पाठ्यक्रम :

प्रथम सत्र

१. **अनुवाद का स्वरूप :** परिभाषा, महत्त्व एवं व्याप्ति, अनुवाद : कला या विज्ञान ?

२. **अनुवाद प्रक्रिया :** मूलभाषा का पाठबोधन और व्याख्यान, लक्ष्यभाषा में अभिव्यक्ति। अनुवाद की प्रक्रियागत स्थितियाँ-अर्थयोग, अर्थहानि, अर्थांतरण, पुनस्सर्जन।

३. **अनुवाद का मौखिक तथा लिखित स्वरूप,** महत्त्व एवं वर्तमान काल में उसकी उपयोगिता, अनुवादक की योग्यता।

४. **अनुवाद के प्रकार :**

प्रक्रिया के आधार पर - शब्दानुवाद भावानुवाद, छायानुवाद, रूपांतरण

गद्य-पद्य के आधार पर-गद्यानुवाद, पद्यानुवाद

विधा के आधार पर-नाट्यानुवाद, काव्यानुवाद, कथानुवाद, आदि।

५. **अनुवाद कार्य में सहायक साधन :** द्विभाषिक कोश, त्रिभाषिक कोश, वर्णनात्मक कोश, सूचियाँ, विषय विशेष के ग्रंथ, कम्प्यूटर। उक्त साधनों के उपयोग में सावधानी।

६. **अनुवाद और लिप्यंतरण :** आवश्यकता, समस्याएँ।

७. **अनुवाद और भाषाविज्ञान :** भाषाविज्ञान के अंग और अनुवाद, अनुवाद और रूपविज्ञान, अनुवाद और वाक्यविज्ञान, अनुवाद और अर्थविज्ञान।

८. रचनात्मक साहित्य का अनुवाद : स्वरूप, आवश्यकता, समस्याएँ, सीमाएँ।

९. अनुवाद-अभ्यास :

मराठी तथा अंग्रेजी के रचनात्मक गद्य साहित्य का हिंदी में अनुवाद-अभ्यास।

(क) अनुवाद - अभ्यास के लिए निर्धारित मराठी रचना - किरवंत (नाटक) - प्रेमानंत गज्वी

(ख) अनुवाद-अभ्यास के निर्धारित अंग्रेजी रचना-

Collie—Mulk Raj Anand (Oxford University Press, Delhi)

(परीक्षा में उक्त रचनाओं में से परिच्छेद दिए जाएँगे। दोनों का हिंदी में अनुवाद अपेक्षित हैं ।)

द्वितीय सत्र

१०. **अनुवाद का सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष** : समाज विशेष एवं संस्कृति विशेष के संदर्भ में उपस्थित सामग्री में देशीय संदर्भ एवं अंतर के कारण अनुवाद - कार्य में उत्पन्न समस्याएँ।

११. **वैज्ञानिक और तकनीकी सामग्री का अनुवाद** : स्वरूप, आवश्यकता, समस्याएँ, सीमाएँ।

१२. **वाणिज्य और व्यवसाय के क्षेत्र की सामग्री का अनुवाद** : स्वरूप, आवश्यकता, समस्याएँ।

१३. **बैंक तथा अन्य कार्यालयों में हिंदी अनुवाद की सामग्री** : स्वरूप, आवश्यकता, समस्याएँ।

१४. **कम्प्यूटर अनुवाद** : आवश्यकता, समस्याएँ, सीमाएँ।

१५. **अनुवाद की समस्याएँ** : मुहावरों और कहावतों का अनुवाद, अलंकारों का अनुवाद, काव्यानुवाद, नाटकानुवाद।

१६. **अनुवाद की शैली** : स्वरूप एवं विशेषता, विविध शैलियों का निर्वाह अथवा परिवर्तन की संभावनाएँ, प्रतिबद्धता एवं स्वतंत्रता का प्रश्न।

१७. **अनुवाद समीक्षा** : आवश्यकता और निकष।

१८. **साहित्येतर सामग्री का अनुवाद-अभ्यास** : मराठी तथा अंग्रेजी का साहित्येतर सामग्री का हिंदी में अनुवाद-अभ्यास अपेक्षित।

(क) अनुवाद-अभ्यास के लिए निर्धारित मराठी ग्रंथ - पुणे विद्यापीठाचा इतिहास-लेखक : राजा दीक्षित (पुणे विद्यापीठ प्रकाशन, पुणे विद्यापीठ, पुणे-७).

(ख) अनुवाद-अभ्यास के लिए निर्धारित अंग्रेजी ग्रंथ -

Wings of Fire (An Autobiography) —by Abdul Kalam.

(परीक्षा में उक्त रचनाओं में से परिच्छेद दिए जाएँगे। दोनों का हिंदी में अनुवाद अपेक्षित हैं।)

संदर्भ ग्रंथ :

१. अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा–डॉ. सुरेश कुमार

२. अनुवादविज्ञान–डॉ. भोलानाथ तिवारी

३. अनुवाद सिद्धांत और व्यवहार–डॉ. एस. के. शर्मा
४. अनुवादविज्ञान : सिद्धांत और अनुप्रयोग–संपा. डॉ. नागेंद्र
५. अनुवाद : सिद्धांत एवं प्रयोग–डॉ. जी. गोपीनाथन्
६. अनुवाद कला : सिद्धांत और प्रयोग–डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया
७. अनुवाद सिद्धांत और समस्याएँ–डॉ. रवींद्रनाथ श्रीवास्तव, डॉ. कृष्णकुमार गोस्वामी
८. अनुवाद बोध–संपा. डॉ. गार्गी गुप्त
९. काव्यानुवाद की समस्याएँ, साहित्य का अनुवाद–डॉ. भोलानाथ तिवारी, महेंद्र चतुर्वेदी
१०. अनुवाद : भाषाएँ-समस्याएँ–डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर
११. अनुवाद और मशीनी अनुवाद–डॉ. वृषभ प्रसाद जैन
१२. अनुवाद कला– डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर
१३. अनुवादविज्ञान : स्वरूप एवं व्यक्ति–संपा. डॉ. मु. ब. शहा, डॉ. पीतांबर सरोदे
१४. अनुवाद : विविध आयाम–डॉ. मा. गो. चतुर्वेदी, डॉ. कृष्णकुमार गोस्वामी
१५. अनुवाद क्या है (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)–डॉ. राजमल बोरा
१६. अनुवादविज्ञान और संप्रेषण (तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली)–डॉ. हरि मोहन
१७. अनुवाद के विविध आयाम (तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली)–डॉ. पूरनमल टण्डन, सेठी
१८. प्रारंभिक अनुवादविज्ञान : सिद्धांत और प्रयोग (सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली)–डॉ. अवधेश मोहन गुप्त
१९. हिंदी में व्यावहारिक अनुवाद–डॉ. आलोक कुमार रस्तोगी
२०. अनुवादविज्ञान–डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया

प्र१

(**सूचना** : सभी प्रश्नों के लिए समान अंक होंगे)

प्रथम सत्र

(कुल अंक - ६०)

प्रथम सत्र के पाठ्यक्रम पर आधारित **पाँच** दीर्घोत्तरी प्रश्न तथा **एक** टिप्पणियों (३ में से २) का प्रश्न होगा । इनमें से **तीन** प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

प्रश्न क्रमांक **सात अनिवार्य** होगा। प्रथम सत्र में अनुवाद-अभ्यास के लिए निर्धारित कृतियों पर आधारित परिच्छेदों (४ में से २) का अनुवाद अपेक्षित हैं।

द्वितीय सत्र

विभाग 'अ'

(कुल अंक - ८०)

प्रथम सत्र के पाठ्यक्रम पर आधारित **तीन** दीर्घोत्तरी प्रश्न तथा **एक** टिप्पणियों (३ में से २) का प्रश्न होगा। इनमें से **दो** प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

विभाग 'ब'

द्वितीय सत्र के पाठ्यक्रम पर आधारित **तीन** दीर्घोत्तरी प्रश्न तथा **एक** टिप्पणियों (३ में से २) का प्रश्न होगा। इनमें से **दो** प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

प्रश्न क्रमांक **नौ अनिवार्य** होगा। द्वितीय सत्र में अनुवाद-अभ्यास के लिए निर्धारित कृतियों पर आधारित परिच्छेदों (४ में से २) का अनुवाद अपेक्षित हैं।

प्र१

(घ) जनसंचार माध्यम और हिंदी

उद्देश्य :

१. जनसंचार माध्यमों का स्वरूप, उद्देश्य, प्रकारों का परिचय देना।

२. संचार तकनीकी का स्वरूप, इतिहास का परिचय देना।

३. सूचना समाज की अवधारणा और जरूरतों का परिचय देना।

४. जनसंचार माध्यमों की सूचना भाषा की अवधारणा, विशिष्टताएँ तथा विविध भाषिक प्रयुक्तियों का परिचय देना।

५. जनसंचार माध्यमों के कारण साहित्य में जो मूलगामी परिवर्तन हो रहे हैं, उनका हिंदी साहित्य के संदर्भ में परिचय देना।

६. भूमंडलीय दौर में जारी हिंदी पत्रकारिता का परिचय देना।

७. मीडिया के द्वारा हिंदी में हो रहे परिवर्तनों का वैश्विक स्तर के परिप्रेक्ष्य में परिचय देना।

८. मीडिया में हिंदी अनुवाद के विविध रूप तथा आवश्यकताओं का परिचय देना।

९. इलैक्ट्रानिक माध्यमों के संदर्भ में हिंदी भाषा के मानकीकरण का परिचय देना।

१०. भाषा की रचनात्मक शक्ति को विकसित करना तथा जनसंचार-माध्यमों में काम करने के लिए कौशलपूर्ण योग्यता विकसित करना।

अध्यापन पध्दति :

१. व्याख्यान तथा विश्लेषण

२. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा

३. दृक्-श्राव्य माध्यमों / साधनों का प्रयोग

४. जनसंचार क्षेत्र से संबंधित संस्थाओं की अध्ययन यात्रा

५. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान।

पाठ्यक्रम

प्रथम-सत्र

१. **जनसंचार माध्यम** : स्वरूप, कार्य, उद्देश्य, सूचना- प्रौद्योगिकी के विविध रूप, इलैक्ट्रॉनिक अंतर्ग्रंथन।

२. **भारतीय संचार तकनीकी** : इतिहास, विकासमूलक संचार, लोकतांत्रिक संचार, वैश्विकीकरण की प्रक्रिया और जनसंचार।

३. सूचना समाज की अवधारणा और जरूरतें।

४. **भाषा की रचनात्मक क्षमता** : सूचना-निर्माण, सूचना शैली, सूचना-संप्रेषण, वाचिक भाषा, लेखन भाषा।

५. **जनसंचार माध्यमों के विविध हिंदी भाषा-रूप** : समाचार, विज्ञापन, विज्ञान एवं अनुसंधान से संबंधित कार्यक्रम, जनशिक्षा, साक्षात्कार, सर्वेक्षण-वृत्तांत, साहित्य-प्रसारण, सामयिक कार्यक्रम, निवेदन, कृषि केंद्रित कार्यक्रम, बच्चों के कार्यक्रम, चर्चा-विश्लेषण, खेल, संगीत, धार्मिक कार्यक्रम, सीधा प्रसारण आदि के हिंदी के भाषा रूप।

६. **जनसंचार माध्यम और हिंदी साहित्य** : जनसंचार माध्यमों में साहित्य की आवश्यकता, जनसंचार माध्यमों से संबंधित हिंदी साहित्य, जनसंचार माध्यमों के कारण हिंदी साहित्य में परिवर्तन।

द्वितीय सत्र

७. **हिंदी में पत्रकारिता के विविध रूप, स्वरूप** : प्रिंट मीडिया (समाचार पत्र), रेडियो की पत्रकारिता, दूरदर्शन की पत्रकारिता, इंटरनेट की पत्रकारिता, पारस्परिक साम्य और वैषम्य।

८. **जनसंपर्क माध्यमों में अनुवाद प्रक्रिया** : अंग्रेजी से हिंदी, हिंदी से अंग्रेजी में, प्रादेशिक भाषाओं में अनुवाद, अनुवाद की आवश्यकता, स्वरूप, हिंदी पर अंग्रेजी का प्रभाव, केबल नेटवर्क की हिंदी।

९. वैश्विकीकरण की प्रक्रिया, जनसंचार और हिंदी का पास्परिक संबंध।

१०. जनसंचार माध्यमों में हिंदी कार्यान्वयन के हेतु आवश्यक योग्यताएँ

११. इलैक्ट्रानिक माध्यमों के संदर्भ में हिंदी भाषा का मानकीकरण-हिंदी भाषा के मानकीकरण की आवश्यकता, भाषा नियोजन-नीति, भाषा-स्थिरता, भाषा-विस्तार की अवधारणा, किताबी भाषा और माध्यमों की भाषा का अंतर

१२. **हिंदी से संबंधित तकनीकी ज्ञान** : संगणक (कम्प्यूटर)-एम. एस. वर्ड, फोटो शॉप, कवर डिजाइनिंग, ग्राफिक्स, डी.टी.पी., मल्टी-मीडिया, इंटरनेट वैबसाइट और इ-कॉमर्स का प्राथमिक परिचय।

संदर्भ ग्रंथ :

१. जनमाध्यम प्रौद्योगिकी और विचारधारा–जगदीश्वर चतुर्वेदी

२. जरसंचार माध्यम : चुनौतियाँ और दायित्व (श्याम प्रकाशन, जयपुर)–डॉ. त्रिभुवन राय

३. जनसंचार माध्यमों का सामाजिक चरित्र–जवरीमल्ल पारीख

४. हिंदी पत्रकारिता के इतिहास की भूमिका–जगदीश्वर चतुर्वेदी

५. मीडिया-विमर्श–रामशरण जोशी

६. परिवर्तन और विकास के सांस्कृतिक आयाम–पूरनचंद्र जोशी

७. मीडिया और साहित्य–सुधीर पचौरी

८. साइबर स्पेस और मीडिया–सुधीर पचौरी

९. साहित्य का उत्तरकांड–सुधीर पचौरी

१०. दूरदर्शन : संप्रेषण और संस्कृति–सुधीर पचौरी

११. दूरदर्शन : विकास से बाजारतक–सुधीर पचौरी

१२. ब्रेक के बाद–सुधीर पचौरी

१३. इक्कीसवीं सदी और हिंदी पत्रकारिता–अमरेंद्र कुमार

१४. एक जनभाषा की त्रासदी–गिरिराज किशोर

१५. सूचना समाज–जगदीश्वर चतुर्वेदी

१६. हिंदी पत्रकारिता : स्वरूप और संदर्भ (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)–डॉ. विनोद गोदरे

१७. हिंदी पत्रकारिता और जनसंचार (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)–डॉ. ठाकुरत्त 'आलोक'

१८. प्रसार भारती प्रसारण नीति (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)–सुधीर पचौरी

१९. हिंदी पत्रकारिता का बृहद् इतिहास (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)–डॉ. अर्जुन तिवारी

२०. आधुनिक जनसंचार और हिंदी (तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली)–प्रो. हरिमोहन

२१. रेडियो और दूरदर्शन पत्रकारिता (तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली)–डॉ. हरिमोहन

२२. दूरसंचार और सूचना प्रौद्योगिकी (प्रभात प्रकाशन, दिल्ली)–डी. डी. ओझा, सत्यप्रकाश

अंग्रेजी संदर्भ ग्रंथ :

२३. मास कम्युनिकेशन थ्योरी–मेक्कानिल डेनिश

२४. इंट्रोडक्शन ऑफ इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी इन् इंडिया–संपा. अवरोल, दिनेश, अशोक जैन

२५. टेक्नोलॉजिकल चेंज इन् द इन्फॉर्मेशन इकोनॉमी–मोंक, पीटर

२६. कम्प्यूटर गाइड–शशिकांत बाकरे

२७. मल्टिमीडिया प्रोड्युसर्स बायबल–रॅन गोल्डबर्ग

२८. इंटरनेट अैंड वर्ल्डवाइड वेब सिंप्लिफाईड–रूथ मारन

२९. मीडिया और साहित्य–सुधीर पचौरी।

प्र१

(**सूचना** : सभी प्रश्नों के लिए समान अंक होंगे)

प्रथम सत्र

(कुल अंक - ६०)

प्रथम सत्र के पाठ्यक्रम पर आधारित **पाँच** दीर्घोत्तरी प्रश्न तथा **एक** टिप्पणियों (३ में से २) का प्रश्न होगा। इनमें से **चार** प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

द्वितीय सत्र

(कुल अंक - ८०)

विभाग 'अ'

प्रथम सत्र के पाठ्यक्रम पर आधारित **तीन** दीर्घोत्तरी प्रश्न तथा **एक** टिप्पणियों (३ में से २) का प्रश्न होगा। इनमें से **दो** प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

विभाग 'ब'

द्वितीय सत्र के पाठ्यक्रम पर आधारित **चार** दीर्घोत्तरी तथा **एक** टिप्पणियों (३ में से २) का प्रश्न होगा। इनमें से **तीन** के उत्तर अपेक्षित हैं।

प्र१

(च) अभिजात भारतीय साहित्य

उद्देश्य :

१. हिंदी साहित्य के अखिल भारतीय परिप्रेक्ष्य से परिचय।

२. हिंदीतर भाषाओं के साहित्य का स्थूल परिचय।

३. विभिन्न भारतीय भाषाओं में व्यक्त भारतीयता की पहचान।

४. हिंदी में अनूदित साहित्य का अध्ययन।

५. साहित्यिक अनुवाद के आस्वादन एवं मूल्यांकन क्षमता में वृद्धि।

अध्यापन पद्धति :

१. व्याख्यान तथा विश्लेषण

२. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा

३. दृक्-श्राव्य माध्यमों/साधनों का प्रयोग

४. विभिन्न भाषा के साहित्यकारों से साक्षात्कार

५. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान।

पाठ्यक्रम :

१. भारतीय साहित्य का स्वरूप

२. भारतीय साहित्य के अध्ययन की समस्याएँ

३. भारतीय साहित्य में आज के भारत का बिंब

४. भारतीयता का समाजशास्त्र

५. हिंदी साहित्य में भारतीय मूल्यों की अभिव्यक्ति।

प्रथम सत्र के लिए कृतियाँ :

१. **हयवदन (कन्नड)** : डॉ. गिरीश कर्नाड

२. **अधूरे-मनुष्य (तमिल)** : डी. जयकान्तन, अनुवादक : के. ए. जमुना, प्रकाशन : भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली

३. **असंगत नाटक (उडिया)** : जगन्नाथ प्रसाद दास, अनुवादक : डॉ. राजेंद्रप्रसाद मिश्र, प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली

द्वितीय सत्र के लिए कृतियाँ :

४. **१०८४ वें की माँ महाश्वेता देवी (बंगला)** : प्रकाशक : राधाकृष्ण प्रकाशन, जनकपुरी, दिल्ली

५. **रसीदी टिकट (पंजाबी)** : अमृत प्रीतम, प्रकाशक : किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली

६. **मलयालम के प्रतिनिधि नाटक (मलयालम)** : संपादक : एम. एस. विश्वभरण, प्रकाशक : लोकभारती प्रकाशन, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद।

संदर्भ ग्रंथ :

१. भारतीय साहित्य–संपा. डॉ. नगेंद्र
२. आज का भारतीय साहित्य–सं. साहित्य अकादमी
३. हिंदी साहित्य के विकास में दक्षिण का योगदान–सं. रेड्डी राव, अप्पल राजु
४. मराठी साहित्य : परिप्रेक्ष्य–सं. डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर
५. बंगला साहित्य का इतिहास–डॉ. बॅनर्जी
६. भारतीय साहित्यकारों से साक्षात्कार–डॉ. रणवीर रांग्रा

प्रश्न

(**सूचना** : सभी प्रश्नों के लिए समान अंक होंगे)

प्रथम सत्र

(कुल अंक - ६०)

प्रथम सत्र के पाठ्यक्रम पर आधारित **पाँच** दीर्घोत्तरी प्रश्न तथा **एक** टिप्पणियों (३ में से २) का प्रश्न होगा। इनमें से **चार** प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

द्वितीय सत्र

(कुल अंक - ८०)

विभाग 'अ'

प्रथम सत्र के पाठ्यक्रम पर आधारित **तीन** दीर्घोत्तरी प्रश्न तथा **एक** टिप्पणियों (३ में से २) का प्रश्न होगा। इनमें से **दो** प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

विभाग 'ब'

द्वितीय सत्र के पाठ्यक्रम पर आधारित **चार** दीर्घोत्तरी तथा **एक** टिप्पणियों (३ में से २) का प्रश्न होगा। इनमें से **तीन** के उत्तर अपेक्षित हैं।

प्र१

(छ) लोक साहित्य

उद्देश्य :

१. लोकसाहित्य के स्वरूप एवं उसके अध्ययन के महत्त्व से परिचित कराना।
२. लोकसाहित्य की विभिन्न विधाओं के अध्ययन द्वारा लोकजीवन में उसकी व्यापकता समझाना।
३. लोकसाहित्य का महत्त्व समझाकर उसके विशेष अध्ययन के लिए प्रेरणा देना।
४. महाराष्ट्र के लोकसाहित्य से परिचित कराना।

अध्यापन पद्धति :

१. व्याख्यान तथा विश्लेषण
२. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा
३. दृक्-श्राव्य माध्यमों/साधनों का प्रयोग
४. लोक साहित्यकारों से साक्षात्कार
५. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान।

पाठ्यक्रम

प्रथम सत्र

१. **'लोक'** शब्द की व्युत्पत्ति एवं अर्थ, लोकतत्त्व अर्थ एवं स्वरूप विवेचन, लोकसाहित्य का स्वरूप - परिभाषाएँ एवं विशेषताएँ - लोकसाहित्य और शिष्टसाहित्य में साम्य-भेद (लोकसाहित्य का क्षेत्र)।

२. **लोकवार्ता** : परिभाषा एवं स्वरूप विवेचन, लोकवार्ता और लोकसाहित्य का संबंध, लोकवार्ता के विषय, लोकवार्ता-विश्लेषण के आधार और पद्धतियाँ, लोकवार्ता - महत्त्व और उपयोगिता।

३. **लोकसाहित्य का महत्त्व** : सामाजिक, आर्थिक, नैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, भाषाशास्त्रीय दृष्टियों से ।

४. **लोकसाहित्य और ज्ञानशाखाओं का परस्पर संबंध** : इतिहास, पुरातत्त्व, मानवविज्ञान, समाजविज्ञान, मनोविज्ञान, भाषाविज्ञान, भूगोल, अर्थशास्त्र, धर्मशास्त्र, शिष्टसाहित्य।

५. **लोकसाहित्य संकलन** : उद्देश्य, संकलन की पद्धतियाँ, संकलनकर्ता की क्षमताएँ, संकलनकर्ता के लिए उपयोगी साधनसामग्री, संकलन कार्य की समस्याएँ और समाधान।

६. **लोकगीत** : परिभाषाएँ, विशेषताएँ और प्रेरणास्रोत, लोकगीत और शिष्टगीत में अंतर - लोकगीतों के वर्गीकरण की पद्धतियाँ, लोकगीतों का परिचय - संस्कारों से संबंधित गीत - सोहर, मुंडन, यज्ञोपवीत, विवाह, गौना, मृत्यु, आदि कजली, होली, सावनगीत, करवा चौथ के गीत।

गडरिया, पोतराज एवं चक्की की ओवियाँ - पवाडा, लावनी, वाघ्यामुरली।

द्वितीय सत्र

७. **लोकगाथा** : परिभाषा, विशेषताएँ एवं स्वरूप, उत्पत्ति विषयक सिद्धांत, वर्गीकरण, किसी एक लोकगाथा का सामान्य परिचय।

८. **लोककथा** : परिभाषा, विशेषताएँ, स्वरूप तथा लोककथा में अभिप्रायों का महत्त्व, लोककथा और धर्मगाथा, लोककथा और किंवदंति, लोककथा के उत्पत्ति विषयक सिद्धांत-लोककथा का वर्गीकरण, लोककथा और शिष्ट कहानी में अंतर - भारत की लोककथा परंपरा।

९. **लोकनाट्य** : परिभाषा, विशेषताएँ एवं स्वरूप, लोकनाट्य और शास्त्रीय नाटक में अंतर - भारतीय लोकनाट्य परंपरा का परिचय - रामलीला, रासलीला, यक्षगान, जात्रा, भवाई, ख्याल, माँच, नौटंकी, कुचिपुडी, तमाशा, गोंधल।

१०. **प्रकीर्ण लोकसाहित्य** : मुहावरें, कहावतें, पहेलियाँ, मुकरियाँ, सूक्तियाँ, ढकोसले, चुटकुले, मंत्र, टोना, आदि का परिचय।

११. **लोकसाहित्य का कलापक्ष** : भावव्यंजना, रसपरिपाक, भाषा, अलंकार योजना, छंद विधान, प्रतीकात्मकता, आदि दृष्टियों से विवेचन।

१२. लोकसाहित्य में सामाजिक-सांस्कृतिक एवं धार्मिक जीवन का चित्रण। महाराष्ट्र के लोकसाहित्य में सामाजिक सांस्कृतिक एवं धार्मिक झाँकियाँ।

१३. राष्ट्रीय जीवन में लोकसाहित्य का महत्त्व।

संदर्भ ग्रंथ :

१. भारतीय लोकसाहित्य–डॉ. श्याम परमार
२. लोकसाहित्य की भूमिका–डॉ. उपाध्याय
३. लोकसाहित्य सिद्धांत और प्रयोग–डॉ. श्रीराम शर्मा
४. लोकसाहित्य के प्रतिमान–डॉ. कुंदनलाल उप्रैति
५. खडीबोली का लोकसाहित्य–डॉ. सत्यगुप्त
६. लोकसाहित्य विज्ञान–डॉ. सत्येंद्र
७. लोकवार्ता और लोकगीत–डॉ. सत्येंद्र
८. लोकसाहित्य का अध्ययन–डॉ. त्रिलोचन पाण्डेय
९. महाराष्ट्र का हिंदी लोकनाट्य–डॉ. कृष्ण दिवाकर
१०. महाराष्ट्र का लोकधर्मी नाट्य–डॉ. दुर्गा दीक्षित
११. लोकगीतों का विकासात्मक अध्ययन–डॉ. कुलदीप

१२. लोकगीतों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि–डॉ. विद्या चौहान
१३. हमारे संस्कारगीत–राजरानी वर्मा
१४. लोककथा परिचय–नलिन विलोचन शर्मा
१५. लोककथा विज्ञान–श्रीचंद्र जैन
१६. लोकधर्मी नाट्य परंपरा–डॉ. श्याम परमार
१७. लोकनाट्य परंपरा और पंक्तियाँ–डॉ. महेंद्र भानावत
१८. भारत के लोकनाट्य–डॉ. शिवकुमार
१९. लोकसाहित्य–इंद्रदेव सिंह
२०. लोकसाहित्य विमर्श–डॉ. श्याम परमार
२१. भारतीय लोकसाहित्य की रूपरेखा–दुर्गा भागवत, अनु. डॉ. स्वर्णकांता स्वर्णिम
२२. मराठी लोकगीत–डॉ. सरोजिनी बाबर
२३. मराठी लोककथा–डॉ. सरोजिनी बाबर
२४. महाराष्ट्र लोकसाहित्यमाला–डॉ. सरोजिनी बाबर
२५. महाराष्ट्र लोकसंस्कृति आणि साहित्य–डॉ. सरोजिनी बाबर, अनु. प्रशांत पांडे

प्रश्न

(**सूचना** : सभी प्रश्नों के लिए समान अंक होंगे)

प्रथम सत्र

(कुल अंक - ६०)

प्रथम सत्र के पाठ्यक्रम पर आधारित **सात** दीर्घोत्तरी प्रश्न तथा **एक** टिप्पणियों (३ में से २) का प्रश्न होगा। इनमें से **चार** प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

द्वितीय सत्र

(कुल अंक - ८०)

विभाग 'अ'

प्रथम सत्र के पाठ्यक्रम पर आधारित **तीन** दीर्घोत्तरी प्रश्न तथा **एक** टिप्पणियों (३ में से २) का प्रश्न होगा। इनमें से **दो** प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

विभाग 'ब'

द्वितीय सत्र के पाठ्यक्रम पर आधारित **चार** दीर्घोत्तरी तथा **एक** टिप्पणियों (३ में से २) का प्रश्न होगा। इनमें से **तीन** के उत्तर अपेक्षित हैं।